तंत्री तथा संपादक :
दीपक देसाई
वर्ष: ४, अंक : ४
अखंड क्रमांक : ४०
फरवरी २००९

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सीटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-३८२४२१
फोन : (०७९)३९८३०१००
e-mail :
dadavani@dadabhagwan.org
अहमदाबाद : (079) 27540408
वडोदरा : (0265) 2414142
मुंबई : 9323528901
राजकोट त्रिमंदिर :
9924343478, 9274111393
U.S.A. : 785-271-0869
U.K.: 07956476253
Website : www.dadashri.org
www.dadabhagwan.org

Publisher, Owner & Printed by :
Deepak Desai on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printer/Press :
Mahavideh Foundation
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
१५ साल का
भारत : ८०० रुपये
यु.एस.ए. : **१५० डॉलर**
यु.के. : **१०० पाउन्ड**
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यु.एस.ए. : **१५ डॉलर**
यु.के. : **१० पाउन्ड**
भारत में D.D. / M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के
नाम से भेजे।

दादावाणी

मोक्षमार्ग की प्रगति, ज्ञानी के परिचय से

संपादकीय

अज्ञान से चित्त अशुद्ध हुआ है। जब तक चित्तशुद्धि नहीं हो तब तक हमें आत्मा का परिचय कैसे हो सकता है? चित्तशुद्धि का उपाय है ज्ञानीपुरुष का परिचय। जिसे आत्मा का संपूर्ण अनुभव हुआ है, जिनमें कषाय, विषय और ममता का एक भी परमाणु नहीं है, जो अहंकार से मुक्त हैं, ऐसे ज्ञानीपुरुष का परिचय होना यह अपूर्व लाभ कहलाए। ज्ञानीपुरुष के द्वारा दृष्टि परिवर्तन होता है, रोंग बिलीफ़ फ्रैक्चर होती है और राइट बिलीफ़ स्थापित होती है, खुद को 'स्व' का परिचय होता है और 'मैं शुद्धात्मा हूँ' का अनुभव होता है। ऐसा अनुपम लाभ मिलने के बाद फिर करने को शेष क्या रहता है? पाँच आज्ञा का पालन यथार्थ रूप से हो इस हेतु ज्ञानी के सानिध्य में रहकर ज्ञान को समझ लेना चाहिए। ज्ञान प्राप्ति हेतु ज्ञानी का परिचय जितना आवश्यक है उतना ही परिचय सत्संग का होना चाहिए। सत्संग से कर्मबंध ढीले पड़ते हैं इसलिए आज्ञापालन में सरलता होती है।

ज्ञान पाया इसलिए लोक परिचय से मुक्त हुए, फिर भी हमारी दृढ भावना होनी चाहिए कि ज्ञानी और सत्संग के परिचय में तो रहना ही है। जितना परिचय ज्यादा उतना ज्यादा लाभ। क़ीमत आज्ञा की है, किंतु रूबरू मिलने से ज्ञानी की डिरेक्ट शक्तियाँ प्राप्त होती हैं। संसार के परिचय हेतु सारा जीवन व्यतीत करते हैं, तब क्या आत्मकल्याण हेतु ज्ञानी का परिचय नहीं रखेंगे?

मेडिकल कालेज में प्रवेश मिलने से क्या हम डॉक्टर बन जाते हैं? डिग्री प्राप्त करने प्रति वर्ष क्या कुछ दिनों की हाज़िरी नहीं देनी पड़ती? अगर आप व्यवसाय करते हो, उसमें ध्यान नहीं दे तो क्या होगा? रिलेटिव वस्तुओं की प्राप्ति हेतु हम जिस प्रकार समय का व्यय करते हैं, वैसे ही पूर्णत्व पाने के लिए भी साल में तीन सौ घंटे सत्संग के लिए अवश्य निकालने चाहिए। जैसे, पौधा लगाने के बाद पानी सींचना और उसका जतन करना ज़रूरी है, वैसे ही, ज्ञानबीज बोने के बाद शुद्धात्मा की प्रतीति रूप जो पौधा अंकुरित हुआ है, उसकी वृद्धि करके अनुभव का पेड़ उगाने, सत्संग रूपी पानी का सींचन निहायत ज़रूरी है।

यहाँ संकलित परम पूज्य दादा भगवान के सत्संग अंशों में, आत्मप्राप्ति के बाद आत्मजागृति हेतु ज्ञानीपुरुष का सानिध्य और प्रत्यक्ष सत्संग कितना अनिवार्य है, यह जानने को मिलता है। पूज्य दादाश्री समझाते हैं कि कोटि जन्मों में जो आत्मज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता वह हमें ज्ञानी की कृपा से केवल एक ही घंटे में प्राप्त हो जाता है, लेकिन यह समाप्ति नहीं है। दूज से पूर्णिमा तक पहुँचने, ज्ञानीपुरुष के हृदय का मर्म समझने और आत्मा के स्पष्टवेदन तक पहुँचने के पुरुषार्थ को सार्थक करने ज्ञानीपुरुष का प्रत्यक्ष परिचय और सानिध्य कितना आवश्यक है इसकी यथार्थ समझ प्राप्त करने में प्रस्तुत संकलन सहायक सिद्ध होगा इसी अभ्यर्थना के साथ....

दीपक देसाई ...

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ है अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। पाठक जहाँ पर भी चंदुभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर कोई बात आप समझ न पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधार कर समाधान प्राप्त करें। भाषांतर में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

मोक्षमार्ग की प्रगति, ज्ञानी के परिचय से

वह है आत्मानुभव

प्रश्नकर्ता : आत्मानुभव हुआ कब कहलाए?

दादाश्री : 'खुद' की प्रतीति होने पर। 'खुद आत्मा है' ऐसी प्रतीति खुद को हो और 'मैं चंदुलाल हूँ' यह बात गलत निकली ऐसा अनुभव हो, तब समझना कि अज्ञान गया।

ज्ञानीओंने आत्मा का अनुभव किसे कहा? अब तक जो दिखता था वह उड़ गया और नयी तरह का दिखाई दिया। अनंत जन्मों से भटकते थे, और जो 'रिलेटिव' दिखाई देता था, वह गया, और नयी तरह का 'रिअल' दिखाई देना शुरू हुआ, दृश्य को अदृश्य किया और अदृश्य था वह दृश्य हुआ। वह आत्मा का अनुभव। आत्मा का अनुभव जिन्हें संपूर्ण हुआ है वह 'ज्ञानीपुरुष' कहलाए। वे सारे ब्रह्मांड का वर्णन कर सकें। सारे जवाब दे सकें। चाहे कोई भी प्रश्न हो, खुदा का पूछे, क्राइस्ट का पूछे, कृष्ण का पूछे या महावीर का पूछे, तो भी 'ज्ञानी' उसका जवाब दे सकें।

निस्पृही पुरुषों और वीतरागों की वाणी हृदयद्रावक(दिल को पिघलादेनेवाली) होती है। चित्तशुद्धि का सबसे छोटा उपाय वह निस्पृही पुरुष का परिचय और दर्शन है। और सबसे अंतिम उपाय है 'ज्ञानी' का दर्शन। इसके अलावा चित्तशुद्धि का कोई उपाय ही नहीं है संसार में।

दादा सानिध्य में बर्ते समाधि

प्रश्नकर्ता : दादाजी के पास बैठने पर शांति हो जाती है और संसारभाव छूट जाता है, यह कैसे संभव है? दादाजी की ऐसी शक्ति है न?

दादाश्री : दादा की शक्ति नहीं है वह। बर्फ़ के पास बैठने पर स्वभाव से ही ठंडक लगती है, वह बर्फ़ की शक्ति नहीं है। वर्ना बर्फ़ भी शोर मचाए कि, 'कैसे ठंडा कर दिया मैंने आपको!' अरे, तू क्या ठंड़ा करनेवाला था? तेरा स्वभाव है वह तो। मतलब हमारे स्वभाव से होता है।

हममें एक परमाणु विषय का नहीं है, ममता का एक परमाणु नहीं है। तब फिर, जहाँ ममता ही नहीं हो, जहाँ अहंकार नहीं हो, वहाँ दूसरा क्या होता है? इसलिए हमारे साथ जो बैठते हैं उनका तो कल्याण ही हो गया न?

अपूर्व लाभ, ज्ञानी के परिचय से

यह आपका मेरे साथ जो परिचय हुआ, वही बहुत बड़ा लाभ हो गया, यह अपूर्व लाभ कहलाए। किसी समय सुनने में नहीं आया हो यह ऐसा लाभ कहलाता है।

क्रमिक मार्ग में, कितने प्रयत्न करने के बाद आत्मा का लक्ष्य ख्याल में आता है। ऐसा लक्ष्य तो बैठता ही नहीं है। वह खुद लक्ष्य में रखा करे। उदाहरण के तौर पर, यदि आप कोई धंधा करते हों, तब फिर उससे जुड़ी बातें आपको लक्ष्य में रखनी पड़ती है न? ऐसे ही, क्रमिक मार्ग में आत्मा को लक्ष्य में रखा करे, कि आत्मा ऐसा है। यानी, उसे प्रतीति बैठने पर फिर ऐसा लक्ष्य में रहे, उसे गुण पर प्रतीति बैठती है। और हमारा तो यह(अक्रम विज्ञान) आत्मानुभव कहलाए। क्योंकि, जहाँ सहज हो वह

अनुभव कहलाए, जो अपने आप प्राप्त होता है। जहाँ प्रयत्न करना पड़े वह अनुभव नहीं कहलाता। क्रमिक में उनको, प्रतीति आदि सब करना पड़ता है (सहज नहीं होता), प्रतीति में प्रयत्न करना पड़ता है।

आपका आत्मानुभव भी आपकी दृष्टि से सही है, गलत नहीं है। मगर वह अंश अनुभव है और अक्रम से आपको सहज प्राप्त हुआ है, इसलिए आपको उसमें लाभ होता है। लेकिन अभी ज्यों-ज्यों प्रगति करेंगे त्यों-त्यों अनुभव बढ़ता जाएगा। ज्यों-ज्यों जागृति उत्पन्न होती जाए उसके बाद पूरी बात समझनी पड़े। ज्ञानी के परिचय में विशेष रहकर सारा ज्ञान समझ लेना है। करना कुछ भी नहीं है, मगर अज्ञान को लेकर जो खड़ा किया गया है उसका ज्ञान के आधार पर छेदन करना है। पुद्‌गल में जो खलबली है (असर होता है) वह बंद हो जाने पर आत्मा का अनुभव होता है। पॅरैलिसिस (पक्षाघात) होने पर भी सुख चला नहीं जाए, वह आत्मानुभव कहलाए। सिर दु:खता हो, भूख लगे, बाहर कैसी भी मुसीबतें आएँ, मगर भीतरी शाता जाती नहीं है उसे आत्मानुभव कहा। आत्मानुभव तो दु:ख में भी सुख का अनुभव करवाए और मिथ्यात्वी को तो सुख में भी दु:ख लगता है, क्योंकि दृष्टि में फर्क है। यथार्थ, जैसा है वैसा दिखता नहीं है, उलटा दिखाई देता है। केवल दृष्टि बदलने की ज़रूरत है। वर्ना लाखों जन्मों तक क्रियाएँ करते रहेंगे तो भी उसका फल संसार ही मिलेगा। दृष्टि बदलनी है।

ज्ञानी परिचय से दृष्टि परिवर्तन

प्रश्नकर्ता : यह दृष्टि बदलने की शुरूआत कैसे होती है?

दादाश्री : दृष्टि बदलने की शुरूआत तो जब 'ज्ञानीपुरुष' मिले तब होती है और उनके पास सत्संग सुनने आते रहें तो धीरे-धीरे हमारी दृष्टि में परिवर्तन होता रहता है। ऐसा करते करते कुछ परिचय होने पर फिर ज्यादा आते-जाते रहें तो दृष्टि बदल जाती है। अथवा 'ज्ञानीपुरुष' से कहें कि 'साहब, मेरी दृष्टि बदल दीजिए,' तो वे एक ही दिन में, एक घंटे में ही बदल दें।

ज्ञानी की दृष्टि से दृष्टि मिल गई कि बात बन गई। इसके लिए 'ज्ञानी' के पास, उनके परिचय में रहना पड़े।

निपटारा लाने की अनोखी रीति

यह दृष्टि तो हमेशा से कैसी है? कि यों ही यदि बैठे हों (आँख पर ऊँगली का दबाव आए इस प्रकार बैठे हों) तो हमें एक ही लाइट के बजाय दो लाइट दिखाई दे। यदि आँख ज़रा विशेषरूप से दब जाए तो दो दिखाई देते हैं या नहीं? अब वास्तव में है तो एक ही, फिर भी दो दिखाई पड़ते हैं। हम रकाबी से चाय पी रहे हों तब भी कईबार, रकाबी के अंदर जो सर्कल होता है वह दो-दो दिखाई देते हैं। क्या कारण है इसका? आँखें दो हैं इसलिए हर चीज़ डबल दिखाई देती है। ये आँखें भी देखती हैं, और वे अंदरूनी आँखें भी देखती हैं। मगर वह मिथ्यादृष्टि है। इसलिए यह सब उलटा दिखलाती है। यदि सही मानों में दिखलाए तो सब चिंता रहित हो जाए, सभी चिंता रहित हो जाएँ। वीतराग विज्ञान ऐसा है कि सारे दु:खों से मुक्त करे। 'विज्ञान' ऐसा ही होता है। विज्ञान हमेशा क्रियाकारी होता है। मतलब, उस विज्ञान को जानने के बाद विज्ञान ही काम करता रहे, आपको कुछ करना नहीं है। जब तक आपको करना पड़ता है तब तक बुद्धि है और जब तक बुद्धि है तब तक अहंकार है। जब तक अहंकार है तब तक इसका निपटारा लाना चाहे तो भी नहीं ला सकते।

'इगोइज़्म' ही अधर्म है, और 'इगोइज़्म' नहीं है वही धर्म है। प्रत्यक्ष 'ज्ञानी' की हाज़िरी के अलावा 'इगोइज़्म' कम नहीं हो पाए।

शास्त्रज्ञान के परिचय से खड़ी शंकाएँ

यदि शास्त्रों की ज़्यादा पढ़ाई की हो तो वह सारा ज्ञान आगे चलकर प्रतिघोष पैदा किया करे इसलिए

मनुष्य वहाँ पर उलझन में पड़ जाए। फिर उलझनें संदेह पैदा करें, शंकाएँ खड़ी करें। वे शंकाएँ ही इस संसार से बाहर निकलने नहीं देती। लंबे अरसे से शास्त्र का परिचय होने के कारण खुद को मन में शंकाएँ खड़ी होती हैं। यानी जितना जानते हैं, उलटे वह ज्यादा चूभता है। ऐसे जानने को भगवान ने 'ऑवरवाइज़नेस' (ज़रूरत से ज्यादा सयानापन) कहा है।

ज्ञानी परिचय से बुद्धि हो सम्यक्

अहंकार होने पर वह लाइट (प्रकाश) बुद्धि के स्वरूप में होता है, बुद्धि पर-प्रकाशक है इसलिए हम स्वरूप देखना चाहें तो नहीं देखने देती। ये सारी बुद्धि विपरीत क्यों कहलाती है? तब कहे कि स्वाभाविक बुद्धि नहीं है, इसलिए। स्वाभाविक नहीं है मतलब संसारानुगामी है, इसलिए विपरीत कहलाए। हमें संसार में भटकानेवाली है। भले ही देवगति में गए हों मगर फिर वापस जानवरगति में भी जाना पड़े। ऐसे यह चार गति में भटकते रहते हैं। यानी, बुद्धि भटकानेवाली है।

भौतिक सुखों में सुख दिखलाए वह विपरीत बुद्धि कहलाए, और सुख मोक्षमार्ग में है या तो आत्मा में है ऐसा जो दिखलाए वह सम्यक् बुद्धि कहलाए। विपरीत बुद्धि का ज़ोर बहुत ज़बरदस्त है। इसलिए, हम आपकी बुद्धि को सम्यक् करने के लिए आपके ऐसे प्रश्नों के उत्तर देते हैं ताकि आपका खुलासा हो, हर तरह से खुलासा हो जाए।

यह जो विपरीत बुद्धि है उसे सम्यक् करनी है। विपरीत बुद्धि सम्यक् कैसे होती है? एक ही सम्यक् बुद्धिवाले को देखने पर विपरीत बुद्धिवाले को पता चले कि 'यह हमारी बात गलत है।' इसलिए ऐसा देखने पर वह तुरंत परिवर्तित हो जाए। कहने से, उपदेश करने से, परिवर्तन नहीं आता। उपदेश से परिवर्तित होता ही नहीं, देखने से ही परिवर्तित होता है।

प्रश्नकर्ता : मनुष्य के पास शायद सम्यक् बुद्धि हो और विपरीत बुद्धि नहीं हो, क्या ऐसा संभव नहीं है?

दादाश्री : मगर आएगी कहाँ से सम्यक् बुद्धि? सम्यक् बुद्धि कब होती है? ज्ञानी से भेंट हुई हो अथवा पहले सम्यक् बुद्धि उत्पन्न हुई हो तब, वर्ना सम्यक् बुद्धि नहीं होती।

प्रश्नकर्ता : मगर यदि विपरीत बुद्धि घटे और सम्यक् बुद्धि बढ़े तो?

दादाश्री : सम्यक् बुद्धि कहाँ से लाए? सम्यक् बुद्धि की कोई खदान नहीं है। सम्यक् बुद्धि तो प्लेटेड वस्तु है। बुद्धि पर प्लेटिंग (मुलम्मा) करने जैसा होता है। उसका प्लेटिंग केवल ज्ञानीपुरुष कर सकते हैं। हम आपकी बुद्धि का प्लेटिंग कर डालें तो सम्यक् बुद्धि हो जाए, वर्ना तब तक विपरीत बुद्धि कहलाए।

ज्ञानीपुरुष के पास सत्संग में बैठने पर, परिचय में रहने पर, विपरीत बुद्धि सम्यक् बुद्धि होती है। आप मेरे पास बैठें, बात सुना करें तो यही की यही बुद्धि परिवर्तित हो जाए। सम्यक् हो जाए और सम्यक् होने के बाद फिर वह इमोशनल(भावुक) नहीं करती। वह बुद्धि (सब कुछ) ऐसा सुंदर चलाए और मोक्ष में ले जाए, ऐसे विचारोंवाली हो जाए। ऐसी बुद्धि काम में आती है। तब तक तो यह विपरीत बुद्धि है। कोई सुध नहीं है, किंचित् मात्र सुध नहीं है जीव को। भटक भटक करने का क्या हेतु है? किस लिए जन्म लेते हैं? जीवन क्या है? किस लिए खाते हैं, पीते है? किसी बात की सुध नहीं है। यों ही खुली आँखों से जगत सो रहा है। ऐसा कैसे पुसाए (रास आए)? हिन्दुस्तान में जन्में हैं और खुली आँखों सोना, यह कैसे पुसाए?

यहाँ ऐसे प्रश्न पूछने में हर्ज़ नहीं है कि 'ऐसे फलाँ संयोग आने पर हमें क्या करना चाहिए?' ऐसा सब यहाँ पूछ सकते हैं। तो मैं उसका खुलासा कर दूँगा। यह ज्ञान (आत्मज्ञान) नहीं होने पर सम्यक् बुद्धि से समस्या हल हो सकती है, मगर कभी सुनी हो, तो। उस समय मेरे शब्द हाज़िर होंगे। क्योंकि हमारा वचनबल होता है इसलिए शब्द हाज़िर हो जाते हैं।

आवरण भेदकर शब्द पहुँचे आत्मा को

प्रश्नकर्ता : जब कोई मनुष्य दादाजी के पास

आए, तो पहले तो दादाजी का ज्ञान वह बुद्धि से ही समझेगा न? दादाजी से ज्ञान लेने के बाद वह बुद्धि से परे होगा न?

दादाश्री : फिर तो बुद्धि का चलन(प्रचलन) ही बंद हो जाए। फिर प्रज्ञा का चलन होता है। प्रज्ञा का स्वभाव है कि मोक्ष में ले जाने के लिए आपको निरंतर सावधान किया करें।

जो यहाँ अध्यात्म समझने आता है वह बुद्धि से नहीं समझता। कोई मनुष्य मेरी बात बुद्धि से समझ ही नहीं पाएगा। क्योंकि मैं जो वाणी बोलता हूँ वह वाणी आवरणों को तोड़कर आत्मा को स्पर्श करती है और उसे खुद को समझ में आती है। बाकी, मैं जो बोलता हूँ, बुद्धि उसका विश्लेषण कर ही नहीं सकती। बुद्धि थक जाएगी। बुद्धि आपको परेशान कर डाले। इसलिए वह बुद्धि इसमें इस्तेमाल ही नहीं करना, उसकी ज़रूरत ही नहीं रहती है।

यह मैं जो बोल रहा हूँ वे आवरणभेदी शब्द हैं। इसलिए आवरण भेदकर सुननेवाले के आत्मा को पहुँचते हैं। और मैं ऐसा कहता हूँ कि आपका आत्मा कबूल करे तो ही स्वीकार करना। आपका आत्मा कबूल करता है इसलिए अब इसमें बुद्धि दूर रहती है।

प्रश्नकर्ता : दादाजी से ज्ञान लेने के बाद महात्माओं को बार बार दादाजी के पास आने को दिल करता है, यह बुद्धि के कारण है या प्रज्ञा के कारण?

दादाश्री : बुद्धि और प्रज्ञा दोनों का काम नहीं है। प्रज्ञा और बुद्धि का काम अलग है। कुछ हिस्सा प्रज्ञा का है, और दूसरे, यहाँ जो लेकर आता है वह पुण्याई से है सब।

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह बराबर है मगर वह तो फिर प्रज्ञा काम करती हो तब होता है न?

दादाश्री : यदि प्रज्ञा काम करती हो तो सारे महात्मा आने चाहिए न? मगर सभी आ नहीं सकते। वे कहते हैं न कि 'मेरी अभी थोड़ी पुण्याई कच्ची पड़ जाती है।' यदि उसके लिए प्रज्ञा ही ज़िम्मेदार होती तो सभी आने चाहिए न?

पुण्य से प्राप्त सुसंयोग...

यह तेरा हमारे साथ का संयोग पुण्य के आधार पर है। तेरा पुण्य खलास हो जाए उसमें हम क्या करें? और तू मानकर बैठ जाए कि 'मुझे यही संयोग चाहिए।' फिर क्या हो सके? मार पड़ेगा, सिर भी टूट जाएगा। जितना मिला उतना लाभ। उसका आनंद मनाना कि 'मेरा पुण्य जागा है।' क्या तू ऐसा मानता है कि यह धारणा अनुसार संयोग प्राप्त होता है?

प्रश्नकर्ता : ऐसा नहीं।

दादाश्री : तब? यह किसी कायदे अनुसार ही है न, या गैरकानूनी होगा?

प्रश्नकर्ता : कायदे अनुसार ही है।

दादाश्री : फिर, मानकर बैठ जाएँ तो क्या हो सकता है? वह तो कभी किसी वक्त पुण्य जागे तब मिलाप हो जाए, फिर अलग होने पर पता चल जाए। इसलिए अलग होने की स्थिति में अनुभव किया हो तो फिर हरकत नहीं होगी न?

पलायन वृत्ति से कहीं कर्म से छूटा जा सकता है? मैं बडौदा में होऊँ, तू बडौदा में हो, फिर भी कर्म हमें मिलने नहीं दे। यह ज्ञान दिया हुआ है। जिस समय जो आ मिला सो 'व्यवस्थित' और उसका समभाव से निकाल (निपटारा), बस इतनी ही बात है।

दादाजी के पास आने में पुण्य हो तब तक समय निकल आए, उस पुण्य का उपकार मानना। ऐसा कहीं हमेशा के लिए होता होगा? ऐसी आशा भी कैसे रखी जाए?

ज्ञानी का सानिध्य, यही मोक्ष

दादाजी से मिलने का तो इतना ही कारण है कि स्पीडी(शीघ्र ही) समस्या का हल निकले, जल्दी से। यदि मेरे साथ छः महीने घूमे तो बस हो गया न? फिर जल्दी ही उसका काम बन जाए। सत्संग से सारे कर्म ढीले पड़ जाएँ, ढीले हो जाएँ इसलिए आज्ञापालन में

सरलता होती है।

आपका और मेरा कितने घंटों का परिचय है अभी, बताइये? मूलत: सारा लोक परिचय, उसके लिए ही सारी ज़िंदगी लगाते थे। तब मोक्षमार्ग प्राप्त करने के लिए भी लगाते थे। मगर यह तो नक़द मोक्ष मिलता है उसके लिए लगाना है। वह मोक्षमार्ग तो आगे जाकर फिर खो भी जाए, फिर भी उसके लिए इतनी ज़िंदगियाँ लगाते थे। तब फिर क्या इसके लिए परिचय नहीं चाहिए?

ज्ञान मिला उसका मतलब यही कि हम लोक परिचय से मुक्त हो गए। फिर भी हमारी ऐसी स्ट्रोंग (प्रबल) भावना होनी चाहिए कि 'ज्ञानी का परिचय मिलना चाहिए।' निरंतर, आते-जाते किसी भी समय, यह परिचय मिलना चाहिए। जितना यह परिचय, उतना लाभ।

प्रश्नकर्ता : मेरा ऐसा है कि मेरी तबियत ठीक नहीं रहती इसलिए दादाजी का लाभ नहीं ले सकता हूँ, यह ज़रा अवरोध है।

दादाश्री : इस 'दादा' का लाभ तो जितने दिन मिला उतना अच्छा, इसलिए जितना लिया जाए उतना लेना। हम जिस शहर में हों, वहाँ आप आएँ कि तुरंत लाभ लेना। नहीं आएँ तब तक निदिध्यासन में रहना। 'दादा' माने कौन? निदिध्यासन से 'दादा' हाज़िर होते हैं लेकिन आज्ञा यही मुख्य 'दादा' है। उनकी आज्ञा का पालन करने का ही बड़ा ध्येय रखना है, अन्य कुछ भी करने जैसा नहीं है। क़ीमत आत्मा की है। रूबरू मिलना यह तो केवल डिरेक्ट शक्तियाँ मिले इसके लिए है। यह(देह रूपी) दिखाई देते हैं वे 'दादा' नहीं हो सकते। इस 'दादा' से तो 'हम' अलग हो गए हैं। आप याद करें तो 'दादा' आपके साथ ही होते हैं।

प्रश्नकर्ता : इस (देह रूपी)'दादा' से भी 'आप' अलग हुए हैं?

दादाश्री : अलग रहते हैं। ताकि आप सभी लाभ पाएँ न! यहाँ जो याद करे, उसका वहाँ('दादा' को) पहुँच जाए। हम कहते हैं न कि, ' 'हम' अलग हैं।' यह जो दिखाई देते है, वे 'दादा' नहीं हो सकते। यह देह तो पब्लिक ट्रस्ट है। जिसके हाथ में आया वह उसका हुआ, हमारे हाथों में भी नहीं है।

सांसारिक परिचय, छूटने पर विस्मृत होवे

हमें संसार विस्मृत हो गया होता है। हमें हस्ताक्षर करने भी नहीं आते हैं। पंद्रह-बीस साल से कुछ लिखा ही नहीं है इसलिए सब विस्मृत हो गया है। यह संसार अपने आप विस्मृत हो जाए ऐसा है। उसके लिए इतने सारे प्रयोग करना ज़रूरी नहीं है। परिचय छूटा कि विस्मृत हो जाए। यानी परिचय छूटना चाहिए। साधारण व्यवहार में हर्ज नहीं है, मगर परिचय की आपत्ति है।

प्रश्नकर्ता : इस संसार के परिचय से ही सारा बखेड़ा खड़ा होता है न?

दादाश्री : आप यदि बिना बखेड़े के हुए मतलब फिर यदि सारे बखेड़ेबाज बैठे हों तब भी आपको क्यों असर होगा? 'हम' तो मूलत: बिना बखेड़े के मनुष्य। 'हमारी' हाज़िरी से ही सारा बखेड़ा चला जाए। 'जिनका' मुकाम 'आत्मा' में ही है, 'उसे' क्या झँझट? जहाँ मुकाम ही 'आत्मा' में है, 'उसे' व्यवहार बाधक नहीं है।

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में जहाँ भय लगता है वहाँ मन तो जाया ही करता है न?

दादाश्री : मन से हमारा लेना भी नहीं है और देना भी नहीं है, नहाना भी नहीं है और निचोड़ना भी नहीं है। पासवाले कमरे में लोग धाँधल मचाते हों, बातें करते हों, माथा पच्ची करते हों तो हमें (खुद को) क्या लेना-देना? वैसे, इस पासवाले कमरे (शरीर) में मन है, बुद्धि है, चित्त है, अहंकार है, वे सब उछल-कूद करते हों तो उसमें हमें क्या? हम केवल देखते रहना है।

(ज्ञान प्राप्ति के बाद) हम शुद्धात्मा हुए। अज्ञान से हमारा अनादि का परिचय रहा है इसलिए अभी अज्ञान खड़ा हुआ करता है। भले ही हम उनसे कहें

कि 'अब आप चाहे उतना शोर मचाएँ तो भी हम सुननेवाले नहीं हैं।' तब भी, अनादि का परिचय है, इसलिए आदत नहीं छूटती है।

शुद्धात्मा की गद्दी पर बैठने का परिचय

सारा जगत प्रतिपक्षी भाव से कर्म बाँधता है। स्वरूप ज्ञानी को प्रतिपक्षी भाव नहीं होता। असर होता है मगर कर्म नहीं बँधता है! और जब पराक्रम खड़ा हो तब तो असर भी नहीं होता। असर में क्या होता है, कि यदि कोई गाली दे, तो 'इसने मुझे ऐसा कहा ही क्यों?' भीतर में ऐसा होता है। मगर पराक्रम ऐसा कहता है कि, 'तेरी कोई भूल होगी इसलिए ही कहते हैं। यह जो घाटा हुआ इसका कारण है कि व्यापार करना आता नहीं है।' ऐसे, खुद के साथ बातचीत करें तो खुद की पहचान होती है, परिचय होता है, 'खुद' की गद्दी पर, शुद्धात्मा की गद्दी पर बैठने का परिचय होता है। किंतु आप तो गद्दी पर से तुरंत उठकर खड़े हो जाते हैं! क्योंकि वह अनादिकाल का (देहाध्यास का) परिचय है, इसलिए, और भुगतना भी अभी शेष रहा है इसलिए।

प्रेक्टिस से खिले दिव्यदृष्टि

अब बाहर जाएँगे तो दिव्यचक्षु इस्तेमाल करेंगे न? ऐसा है कि अनादि से अज्ञान का परिचय है, इसलिए इसे थोड़ा प्रेक्टिस में लेने के लिए दो-चार बार अभ्यास करेंगे, फिर चालू हो जाएगा।

परिचय से प्राप्त हुई प्रतीति

आत्मा का लक्ष्य आपको कितना समय रहता होगा?

प्रश्नकर्ता : रहा ही करता है।

दादाश्री : निरंतर रहे। यानी जिसने मेरे साथ अधिक परिचय रखा है, उसे निरंतर ऐसा रहे, क्योंकि यह आत्मा का अनुभव ज्ञान है। आत्मा का लक्ष्य बैठा है, इसलिए निरंतर रहे।

प्रश्नकर्ता : लेकिन जब ऑफ़िस में काम होता है तब निरंतर नहीं रहता।

दादाश्री : जब काम में हों तब नहीं रहता उसके माने यही कि उस समय लक्ष्य में नहीं रहता मगर प्रतीति में होता है न!

प्रश्नकर्ता : समय आने पर ज्ञान हाज़िर नहीं रहे लेकिन बाद में हाज़िर हो जाए तो इसमें हमें क्या समझना? हममें समझ की कमी है? पुरुषार्थ में कच्चापन है? या जागृति का अभाव है?

दादाश्री : इसमें जागृति का अभाव, पुरुषार्थ का कच्चापन या समझदारी की कमी नहीं है। मात्र उस समय पर ज्ञान हाज़िर नहीं रहता है। किसी के साथ लेन-देन का हिसाब हो रहा हो, क्या उस वक्त लक्ष्य नहीं रहता कभी भी, तब क्या रहता है?

प्रश्नकर्ता : उस समय पूरा ध्यान उस लेन-देन में होता है।

दादाश्री : उस समय लक्ष्य नहीं रहता इसलिए आप समझे कि अंदर एकाकार हो गया है, मगर प्रतीति नहीं जाती। प्रतीति निरंतर बनी ही रहती है।

प्रश्नकर्ता : यानी वह कामकाज पूरा होने पर फिर मूल स्वरूप में आ जाएँ?

दादाश्री : निरंतर प्रतीति का तार जुड़ा रहता है इसलिए मूल स्वरूप में आ सकते हैं, वर्ना नहीं आ सकते। निरंतर तार जुड़ा है, निरंतर प्रतीति माने क्षायक सम्यक्त्व कहलाए। इसलिए इस निरंतर प्रतीति को लेकर, किसी के साथ झँझट पूरी हुई कि फिर 'मैं शुद्धात्मा हूँ' हो गया, वही लक्ष्य। फिर लक्ष्य में आ सकें, और लक्ष्य में आने के बाद यदि कभी एकांत मिल गया किसी जगह, तो अनुभव में भी आ सकते हैं। अनुभव रस चखने पर खुद का जो आत्मस्वभाव है उसका अनुभव बर्ते, लक्ष्य बर्ते, प्रतीति बर्ते। इन तीन सीढ़ियों से नीचे नहीं उतरते। निरंतर प्रतीतिमय है यह। क्रमिक मार्ग में तो प्रतीति क्षयोपशम होती है। घड़ी में प्रतीति होती है तो घड़ी में उड़ गई होती है, घड़ी में उपशम हुई होती है तो घड़ी में क्षय हुई होती है और

यह तो निरंतर क्षायक प्रतीति कहलाए। चौबीसों घंटे प्रतीति जाती नहीं। निरंतर, सारी ज़िंदगी तक 'मैं शुद्धात्मा हूँ,' यह प्रतीति बनी रहती है। और पहले तो चौबीसों घंटे 'मैं चंदुभाई हूँ' यह प्रतीति जाती नहीं थी। पहले आपको चौबीस घंटे 'मैं चंदुभाई हूँ' ऐसी प्रतीति रहती थी न?

प्रश्नकर्ता : हाँ जी, पहले ऐसा ही था।

दादाश्री : निरंतर, चौबीसों घंटे? 'मैं आत्मा हूँ' ऐसा थोड़ी देर के लिए तो रहता होगा न?

प्रश्नकर्ता : नहीं रहता था। 'जनरल मेनेजर हूँ, और यह हूँ, और वह हूँ' ऐसा सब रहता था।

दादाश्री : वह प्रतीति मतलब रोंग बिलीफ़, उसका नाम मिथ्यात्व। और यह प्रतीति वह राइट बिलीफ़, उसका नाम सम्यक् दर्शन। देखिये यह सम्यक् दर्शन उत्पन्न हुआ है, और वह भी क्षायक!

प्रश्नकर्ता : वैसे तो अंदर से 'अलग हूँ' ऐसा ही है, वैसे समझदारी में बराबर है मगर कभी-कभी मिलावट हो जाती है।

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं है। आपसे पूछा जाए कि 'आप चंदुलाल हैं या शुद्धात्मा,' तो क्या कहेंगे?

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा, उसमें तो विकल्प ही नहीं है।

दादाश्री : तो फिर वही कहना। दूसरा सब, 'ऐसा रहता है या ऐसा नहीं रहता,' यह नहीं देखना। ऐसा कुछ देखना होता ही नहीं। आपकी प्रतीति में क्या है इतना ही देखना है।

प्रश्नकर्ता : प्रतीति में तो, दादाजी मिले इसलिए यथार्थ हो गया।

दादाश्री : बस, इतना ही देखना है। दूसरा कुछ भी देखना नहीं होता। वह निरंतर प्रतीति का तार जुड़ा है इसलिए लक्ष्य बैठता है, वर्ना लक्ष्य नहीं रहता। लक्ष्य बैठता ही नहीं न। किसी के साथ बातों में लग जाएँ तो लक्ष्य चूक जाएँ मगर बातें पूरी होने पर फिर लक्ष्य आ जाए।

वह निरंतर प्रतीति का तार, क्षायक सम्यक्त्व, क्षायक सम्यक् दर्शन है। वह सिद्ध भगवंतों के आठ गुणों में से एक गुण है। यानी एक बटा आठ सिद्ध दशा यहाँ उत्पन्न होती है।

यानी हमें प्रतीति बैठनी चाहिए। 'हम कौन हैं?' ऐसी प्रतीति बैठ गई यानी हमारा छुटकारा ही हो गया। प्रतीति मतलब विझा मिल गया मोक्ष का, फिर टिकट मिल जाए कि हो गई समस्या हल। टिकट नहीं हो तो भी झँझट। विझा नहीं हो तो भी झँझट। दोनों साथ हुआ इसलिए जब तारीख आई कि निकल पड़े। उस तारीख पर निपटारा नहीं आया तो दूसरी तारीख तय कर लेना। मगर ये दोनों साथ होने पर चल निकला।

'संग का रंग' प्रतीति के प्रताप से

यह ज्ञान प्रदान करने के बाद दूसरे दिन से आत्मा की प्रतीति बैठती है। क्या दूसरे दिन से प्रतीति नहीं बैठती?

प्रश्नकर्ता : हाँ जी, बैठ जाती है।

दादाश्री : फिर उससे अधिक और क्या चाहिए? इस दुनिया में कोई ऐसी चीज़ नहीं है कि जिससे दूसरे दिन से ही आत्मा की प्रतीति बैठती हो।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, ऐसी प्रतीति किसी-किसी को पुस्तकें पढ़ने से भी होती है न?

दादाश्री : नहीं, उसे प्रतीति नहीं कहते।

प्रश्नकर्ता : दादाजी की आप्तवाणी और आप्तसूत्र ऐसे हैं कि दादाजी को नहीं मिले हों तो भी उसमें प्रतीति जैसा लगता है। वह क्या है?

दादाश्री : वह प्रतीति तो बुद्धि की प्रतीति है, उसे मूल प्रतीति नहीं कहते। वह काम में नहीं आती। वह कब बदल जाए यह नहीं कहा जाए। वह तो अभी एक सर्टिफिकेट दे और दो घंटे के बाद दूसरा सर्टिफिकेट दे। प्रतीति माने, बदल नहीं जाए वह प्रतीति कहलाए। आपको ऐसी प्रतीति बैठी है। प्रतीति वह

कहलाए कि कभी वह अपना स्थान नहीं छोड़े। कभी प्रतिकूलता आने पर यों आड़ी या टेढ़ी हो जाए, पर स्थान नहीं छोड़ती।

आपको वही प्रतीति प्रदान की है। चाहे कितना भी सांसारिक दबाव आए, भयंकर दबाव आए, चाहे सामने फाँसी भी आकर खड़ी हो जाए तब भी प्रतीति जानेवाली नहीं। सनातन वस्तु है प्रतीति। वह कोई श्रद्धा-विश्वास जैसी वस्तु नहीं है, श्रद्धा तो कल सबेरे उड़ भी जाए। प्रतीति नहीं जाए। विश्वास तो खिसक जाए मगर प्रतीति नहीं खिसकती।

प्रति + इति, इति शब्द आत्मा को लागू होता है। जैसे नेति कहते हैं न? न-इति, न-इति,(उदाहरण के तौर पर, शास्त्र में आत्मा नहीं है---नेति) ऐसे इति आत्मा को लागू होता है, प्रतीति। आत्मा के अलावा अन्य कहीं पर भी प्रतीति शब्द का उपयोग नहीं कर सकते और यह प्रतीति कभी भी उठनेवाली नहीं है, मार डालो तो भी नहीं जाए। वर्तन में शायद ऐसा नहीं दिखाई दे, कभी किसी के साथ कहासुनी हो जाए। 'आप ऐसे हैं, वैसे हैं' ऐसा बोले भी, किंतु फिर भी एकबार प्रतीति बैठ गई वह नहीं जाती। यह क्षायक प्रतीति है। यह कोई ऐसी-वैसी वस्तु है क्या! श्री कृष्ण भगवान ने प्राप्त की थी ऐसी क्षायक प्रतीति है। एकबार चिपकी सो चिपकी। सिर्फ थोड़े घंटों का परिचय होने पर भी फिर मेरा संग क्यों छूटता नहीं है? लंबा परिचय तो है नहीं, तब वह प्रतीति का प्रताप है। मेरे साथ जो आड़ापन करता है, वह उसके कर्म का उदय ऐसा होने के कारण ऐसा करता है बेचारा। वह मैं समझता हूँ, मगर उसकी प्रतीति नहीं जाएगी।

प्रश्नकर्ता : यानी, एकदम से दृढ़ विश्वास हो जाए वह प्रतीति कहलाए?

दादाश्री : विश्वास माने प्रॉमिस (वचन)। प्रॉमिस भंग होने में कितनी देर लगे? और यह तो प्रतीति, और वह भी किस प्रतीति में आपको बिठाया है? केवल प्रतीति में ही नहीं, आपको गाढ़ प्रतीति में बिठाया है। तीर्थंकर अवगाढ़ प्रतीति में थे।

हमें (दादाश्री को) अवगाढ़ प्रतीति होती है। भले ही तीर्थंकर नहीं हैं लेकिन हमें अवगाढ़ प्रतीति होती है। आपको गाढ़ में बिठाया है। और क्रमिक मार्ग में शब्द से प्रतीति होती है, इस अक्रममार्ग में अनुभव से होती है। बाद में लक्षण प्रकट होते हैं, क्षमा के लक्षण दिखाई दें, नम्रता के लक्षण दिखाई दें, सरलता के लक्षण दिखाई दें, संतोष के लक्षण दिखाई दें। सारे लक्षण दिखाई दें। यह प्रतीति बैठने का लक्षण क्या है? तब कहे, ये सारे लक्षण दिखाई दें। अभी कोई आपको गालियाँ सुनाकर जाए तो आप उबल पड़ें किंतु आख़िर में उसको क्षमा कर दें। पहले जो थे वह चंदुलाल अब आप नहीं रहे।

प्रश्नकर्ता : उसमें बड़ा फ़र्क है।

दादाश्री : मतलब प्रतीति बैठी है, इसलिए। फिर नम्रता भी आपको दिखाई देती होगी कि पहले नम्र नहीं थे, पहले अकडू थे और अकडू की अकड़ कैसे कम हो गई? मानों सरलता तो थी ही पर मोड़नेवाला अच्छा मनुष्य चाहिए। फिर संतोष नहीं था, वह संतोष भी उत्पन्न हुआ। कुछ तो उत्पन्न हुआ न! 'व्यवस्थित के अधीन है' ऐसा कहें मतलब उसी का नाम संतोष और 'मैं कर्त्ता हूँ' वहाँ असंतोष।

कर्त्ताभाव से कर्म

'मैं कर्त्ता हूँ' यह भान के साथ, फिर जो कुछ होता है वह भावकर्म कहलाए। 'मैं कर्त्ता हूँ इसका' वह भावकर्म। भोक्ताभाव से भुगता वह भी भावकर्म कहलाए। इस ज्ञान के बाद हम भोक्ताभाव से नहीं भोगते, निपटारे के भाव से भोगते हैं। 'मैं कर्त्ता नहीं हूँ, किंतु व्यवस्थित कर्त्ता है' ऐसा तो रहता है न? फिर क्या? तो भावकर्म उड़ गए।

संयोगों के दबाव से बदली मान्यता

प्रश्नकर्ता : भावकर्म किसे होता है, यह ज़रा समझना है। यह भावकर्म करता कौन है?

दादाश्री : वह तो ऐसा है कि भावकर्म वह वस्तुस्थिति में देखा जाए तो आत्मा की ही शक्ति है। वह तो आत्मा (व्यवहार आत्मा) की बिलीफ़ चेन्ज होती है (बदलती है)। ज्ञान को कुछ नहीं होता है, बिलीफ़ को ही होता है।

भावकर्म क्यों होता है? तब कहे, आत्मा तो देख-जान सके ऐसा है, मगर इस समसरण मार्ग में सारे संयोग जो आ मिलते हैं, वे सारी छः वस्तुएँ, उनको लेकर पर्दे हैं, आँखों पर (द्रव्यकर्म रूपी आवरण की) पट्टियाँ बँधती हैं। इन आठ द्रव्य कर्मों में से चार कर्म (ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय, अंतराय) की (आवरण रूपी पट्टी) आँखों पर बँधी है और दूसरे जो चार कर्म शेष हैं (नाम, गोत्र, आयुष्य, वेदनीय) उन्हें देह से भुगतने हैं।

चार द्रव्यकर्म की जो पट्टियाँ आँखों पर बँधती हैं, उनके कारण सब उलटा दिखाई देता है और सब उलटा चलता रहता है। खुद अपने बारे में उलटा मानते हैं, वह भावकर्म। जब आत्मज्ञान प्रदान करते है तब पट्टियाँ खुल जाएँ फिर सब सीधा चलता है। मगर उन भावकर्मों का वास्तविक कर्त्ता कौन है? तब कहे, अहंकार, वह जो भुगतता है। आत्मा इसमें भुगतता नहीं है।

टूटे आवरण, सत्संग से

प्रश्नकर्ता : भाव के बारे में मुझे ठीक से समझ में नहीं आया अभी।

दादाश्री : इस सारी ज़िंदगी के जो कारण (कॉज़िज़) हैं वे अगले जन्म में पट्टियों के रूप में आते हैं, आवरण के रूप में मतलब पट्टियाँ, यदि हरी रही तो हरा दिखे, पीली रही तो पीला दिखे(जैसा आवरण हो, वैसा दिखे)। यानी लोगों को अलग-अलग भाव उत्पन्न होते हैं।

प्रश्नकर्ता : यानी फिर, यह द्रव्यकर्म वह अगले भव का कारण हुआ न?

दादाश्री : अगले भव का कारण वही पट्टियाँ (द्रव्यकर्म), जो आत्मा को अंध बनाता है। इसलिए भाव करता है, वर्ना आत्मा कभी भी भाव नहीं करता है।

प्रश्नकर्ता : भाव तो प्रतिष्ठित आत्मा ही करे न, दादाजी? शुद्धात्मा तो करता ही नहीं न?

दादाश्री : वस्तुस्थिति में तो प्रतिष्ठित आत्मा भी भाव करता ही नहीं! शुद्धात्मा भी भाव नहीं करे। यह तो 'मैं चंदुभाई हूँ' ऐसा जो मानता है, वह व्यवहार आत्मा भाव करता है। प्रतिष्ठित आत्मा तो भाव को लेकर ही उत्पन्न हुआ है न! यदि भाव नहीं होते तो प्रतिष्ठित आत्मा होता ही नहीं।

उलटी पट्टियाँ ही बाधक हैं। वे उलटी पट्टियाँ क्या है? पूर्व के हमारे कर्मों के लेन-देन का फल है, जो हमें उलटा दिखलाता है।

प्रश्नकर्ता : उनका ज़ोर कितना होता है?

दादाश्री : ज़ोर का तो ऐसा है, कि उस मूल कारण का जितना ज़ोर होता है उतना ही ज़ोर कार्य में होता है। यदि कारण ज़ोरदार रहा तो कार्य ज़ोरदार होता है। कारण ढीला रहा तो कार्य ढीला होता है।

हम ज्ञान प्रदान करते हैं इसलिए आवरण का बहुतेरा हिस्सा जो है, वह उड़ जाता है। मगर कुछ महात्माओं को अंदर पचता नहीं है, यह विज्ञान पचता नहीं है(पूर्णरूप से अनुभव में नहीं आता)। ज्यों-ज्यों पचेगा त्यों-त्यों खुलासा होता जाएगा। एकदम से पचने वाला नहीं न? मगर सत्संग में रहा करे तो उनकी गाड़ी पटरी पर आ जाए। क्योंकि यह सत्संग ऐसी वस्तु है कि इससे दिन-प्रतिदिन आवरण टूटते जाएँ, मगर परिचय ज़रूरी है।

बीज बोने के बाद पानी नहीं देना चाहिए क्या?

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लेने के बाद भी 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा ख़्याल रखना पड़ता है, जो ज़रा मुश्किल लगता है।

दादाश्री : नहीं, रखना नहीं पड़े, अपने आप

ही रहे। मगर इसके लिए क्या करना पड़े? उसके लिए मेरे पास आना-जाना पड़े। उसे (उस बीज को) जो पानी देना चाहिए वह नहीं दिया जाता इसलिए मुश्किल हो जाता है यह सब। आप धंधा करते हों और तब यदि आप धंधे में ध्यान नहीं देंगे तो क्या होगा धंधे का?

प्रश्नकर्ता : ठप्प हो जाएगा।

दादाश्री : हाँ, वैसा यह भी है। ज्ञान लेने के बाद, उसे पानी देना पड़े तो पौधा ऊपर उठेगा। पौधा होता है न छोटा, उसे भी पानी देना पड़ता है। इसलिए महीने, दो महीने में एक दिन पानी छिड़कना है हमें।

प्रश्नकर्ता : घर पर छिड़कते हैं न?

दादाश्री : नहीं, ऐसा घर पर छिड़कना नहीं चलता। ज्ञानी यहाँ रूबरू आए हों और हमें उनकी वैल्यू(क़ीमत) ही नहीं हो? स्कूल गए थे कि नहीं गए थे? कितने साल गए थे?

प्रश्नकर्ता : दस साल।

दादाश्री : क्या सीखे वहाँ पर? भाषा! एक अँग्रेज़ी भाषा सीखने में दस साल लगा दिए, तो यहाँ मैं तो छ: महीने ही कहता हूँ, छ: महीने मेरे साथ रहे तो काम बन जाए।

निश्चय स्ट्रोंग तो अवरोध टूटे

प्रश्नकर्ता : बाहर के प्रोग्राम निर्धारित हो गए हैं। इसलिए आने में तकलीफ़ पड़े ऐसा है।

दादाश्री : वह तो हमारा भाव स्ट्रोंग(दृढ़) रहा तो सब टूट जाए। अंदर हमारा भाव स्ट्रोंग है या ढीला है, यह देख लेना। उसका ज्ञाता-द्रष्टा रहना।

गारन्टी, सत्संग से सांसारिक मुनाफ़े की

मेरे पास यहाँ जो व्यापारी आते हैं, वे बहुत बड़े व्यापारी हैं। वे यदि दुकान पर घंटाभर देर से जाएँ तो उनका बड़ा नुकसान हो जाए, वे इतने बड़े हैं। उनको मैंने कहा है कि 'यहाँ आएँगे उतना समय नुकसान नहीं जाएगा और यदि रास्ते में किसी दुकान के आगे आधा घंटा रुक गए तो आपका नुकसान होगा।' यहाँ आएँगे तो ज़िम्मेदारी मेरी, क्योंकि इसमें मेरा कोई लेना-देना नहीं है, यहाँ आप अपने आत्मा के लिए ही आए हैं। इसलिए मैं सभी से कहता हूँ कि यदि यहाँ आएँगे तो आपका किसी प्रकार से कोई घाटा नहीं होगा।

प्रश्नकर्ता : बुद्धिवाले यदि बुद्धि का त्याग कर सकें तो वह भी बहुत कहलाए न?

दादाश्री : बुद्धि तो उनको भी परेशान करे, छलावा करे। ऐसा करे, वैसा करे। मगर वे हमें छोड़ते ही नहीं न!

यह शुद्धात्मा पद तो कोई छोड़े ही नहीं न! यहाँ तो, यदि रोज़ चिमटे मारा करें तो भी यह पद छोड़ना नहीं चाहिए।

दादाई सत्संग की अलौकिकताएँ

यदि कर्म के उदय बहुत भारी आएँ तब हमें समझ लेना है कि ये उदय भारी हैं इसलिए शांत रहना है। उदय भारी हो तब ठंडे होकर सत्संग में ही पड़े रहना। ऐसा तो चलता ही रहता है। कैसे-कैसे कर्म के उदय आएँ यह कहा नहीं जाए।

यहाँ (दादा के सानिध्य में) बैठने पर, कुछ नहीं करेंगे तो भी अंदर परिवर्तन होता ही रहेगा, क्योंकि यहाँ सत्संग है। सत् माने आत्मा, उसका संग। दादाश्री वह प्रकट सत् हैं, इसलिए उनके संग में बैठे मतलब यह अंतिम सत्संग कहलाए। अन्य सभी सत्संग हैं मगर वे सबसे अंतिम सत्संग नहीं हैं।(अंतिम यानी, अब इससे आगे शेष कुछ नहीं है।)

प्रश्नकर्ता : विशेष जागृति की वृद्धि का उपाय क्या है?

दादाश्री : इस सत्संग में पड़े रहना यही उपाय है।

प्रश्नकर्ता : आपके पास छ: महीने बैठें तब स्थूल परिवर्तन होता है फिर सूक्ष्म में फेरफार होता है, ऐसा कहना है आपका?

दादाश्री : हाँ, सिर्फ बैठने से ही परिवर्तन होता रहे।

प्रश्नकर्ता : स्थूल परिवर्तन माने क्या?

दादाश्री : स्थूल परिवर्तन मतलब बाहरी हिस्से की सारी मुश्किलें समाप्त हो गई, केवल अंदर की रही। फिर आगे यदि उतना सत्संग हुआ तो अंदर की मुश्किलें भी समाप्त हो जाएँ। दोनों के खलास होने पर, हो गया संपूर्ण। यानी यह परिचय करना चाहिए। दो घंटे, तीन घंटे, पाँच घंटे, जितने जमा किए उतना लाभ। लोग, ज्ञान मिलने के बाद ऐसा समझ लेते हैं कि अब कोई काम करने को रहा ही नहीं है। मगर परिवर्तन तो हुआ ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : पूर्णपद की प्राप्ति के लिए महात्माओं को क्या गरज़ रखनी चाहिए?

दादाश्री : जितना बन पड़े उतना जीवन 'दादा' के पास गुज़ारना यही गरज़, दूसरी कोई गरज़ नहीं। रात-दिन कभी भी, मगर 'दादा' के पास में ही रहना। उनकी विझिनिटी में (दृष्टि मर्यादा में) रहना।

प्रश्नकर्ता : हम जो यह सत्संग करते हैं वह पुण्य के खाते में जाए या शुद्ध कर्म के खाते में जाए?

दादाश्री : वह तो ऐसा है कि ये जो शुद्ध हुए हैं, अहंकार से विमुक्त हुए हैं, उनको शुद्ध के खाते में ही जाता है। मगर जिसे अहंकार है, 'यह मैं हूँ' ऐसा है, तब तक इसका फल यदि चाहे तो केवल पुण्य ही होता है और यदि इसके अनुसार बर्ते तो मुक्ति भी पा जाए। बाकी, इसके फलस्वरूप तो बहुत बड़ा पुण्य बँधता है। सच्चे आत्मा की बात सुनना, उसके ऊपर थोड़ी-बहुत श्रद्धा बैठना, यह कोई ऐसी-वैसी बात है क्या?

हम यहाँ सत्संग करते हैं, यह जो बातचीत होती है, उस घड़ी देवतागण सुनने को आते हैं। ऐसी बात तो दुनिया में कभी हुई ही नहीं है। यह किस की बात चल रही है? यहाँ पर संसार संबंधी किंचित् मात्र बात नहीं है। इस बात में सांसारिक भाग बिलकुल नहीं है, एक सेन्ट(रत्तीभर) भी नहीं।

अब जरूरत, ज्ञान को सूक्ष्मता से समझने की

प्रश्नकर्ता : कईबार ऐसा प्रश्न उठता है कि आपके परिचय में आकर अब हमें यहाँ क्या करना है?

दादाश्री : आपका जहाँ अटका हो वह ज्ञान यहाँ आकर जान लेना। मगर वह संयोग रोज़ नहीं आता। वह ज्ञान, वह वाणी ऐसी वस्तु नहीं है कि आप अभी निकालने जाएँ तो निकले। क्योंकि यह वाणी रिकार्ड है। जितना रिकार्ड निकलता हो उतना निकले। इसलिए जितना अधिक समय आप यहाँ आए और तब वह बात निकले तब वह ज्ञान आपको उस दिन मिल जाए।

यहाँ पर खुद की सेफ़साइड के लिए समझ लेना है। हम जो कहें वह भी पूर्ण रूप से समझ में नहीं आए। खुद की छलनी (समझने की शक्ति) हो उसके अनुसार छानें (समझे)।

प्रश्नकर्ता : हम जितना समझते हों, उसे सही मानकर चलने पर फिर उलटा नहीं हो जाए?

दादाश्री : सही नहीं मान सकते। खुद के मन में जो लाभ हुआ वह सही। और अन्य किसी को आप यह जवाब नहीं दे सकते।

प्रश्नकर्ता : अन्य किसी के लिए नहीं। खुद के लिए पूछ सकते हैं न?

दादाश्री : यहाँ सब खुद के लिए समझना है। मगर वह तो जितनी समझदारी आई उतनी सही। छलनी जैसी रही उसके अनुसार समझदारी होगी। मतलब खुद के लिए, पूछताछ करके समझ लेना। 'यह क्या है? मुझे समझना है। मुझे ऐसी अड़चन आई है (तब आगे कैसे बढ़ना),' ऐसे, पूछकर सब समझ लेना है।

यह ज्ञान बारीक़ी से समझ लेना पड़ेगा। क्योंकि यह ज्ञान घंटेभर में दिया गया है। कितना बड़ा ज्ञान !!! जो एक करोड़ साल में नहीं हो सके वही ज्ञान घंटेभर में होता है। मगर बेसिक (बुनियादी) ज्ञान होता है। फिर विस्तार से समझना पड़ेगा न? उसे विस्तार से समझने

के लिए तो आप यहाँ सत्संग में आएँ तब मैं आपको समझाऊँ। इसलिए हम कहा करते हैं न कि सत्संग की बड़ी आवश्यकता है। आप ज्यों-ज्यों यहाँ अपनी उलझनें पूछते जाएँ, त्यों-त्यों वे उलझनें सुलझती जाएँ।

प्रश्नकर्ता : आपकी कुछ वाणी जो निकलती है, उसे समझने के लिए फिर से पूछ लेना चाहिए न?

दादाश्री : वह तो जिसे चूभे, उसे पूछ लेना है कि 'मेरे नीचे कँकड़ कहाँ से आता है?' बाकी, सभी को राह पर लाना है न! जो पीछे रह गया हो उसे भी।

परिचय से हो सकें उस रूप

प्रश्नकर्ता : आपने जो दिया है उससे, इस काल में आप जिस स्थिति तक पहुँचे हैं उस स्थिति तक क्या हम पहुँच सकें?

दादाश्री : हमें दूसरा काम ही क्या है? आपको निराकुलता प्राप्त हुई है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ जी।

दादाश्री : निराकुलता वह सिद्ध भगवान का १/८ गुण है, यानी आप १/८ सिद्ध हुए हैं। शेष जो रहा है, वह आगे चलकर पूरा हो जाएगा। ठप्पा लग गया न? फिर काहे का डर? निराकुलता उत्पन्न होने के बाद फिर क्या रह गया शेष? वर्ना चिंताएँ भटक-भटक करवाए। 'इगोइज़्म' भटक, भटक करवाए।

ज्ञानी के पास प्राप्त निराकुल आनंद

सारे जगत में जो आनंद है वह आकुलता-व्याकुलतावाला आनंद है और 'ज्ञान' (आत्मज्ञान) प्राप्त होने के बाद निराकुल आनंद उत्पन्न होता है।

आनंद के दो प्रकार : एक, आपको 'बिझनेस' में बहुत रुपये मिल जाए, अच्छा सौदा हो गया हो, उस समय आनंद होता है मगर वह आकुलता-व्याकुलतावाला आनंद है, मूर्च्छित आनंद कहलाए। बेटे की शादी करे, बेटी की शादी करे उस घड़ी आनंद होता है, वह भी आकुलता-व्याकुलतावाला आनंद मूर्च्छित आनंद कहलाए। और निराकुल आनंद होने पर समझना कि आत्मा प्राप्त हुआ है।

प्रश्नकर्ता : यह जो निराकुल आनंद कहते हैं वह कौन-सा कहलाए?

दादाश्री : यहाँ सत्संग में जो होता है वह सब निराकुल आनंद है। यहाँ आकुलता-व्याकुलता नहीं होती।

आकुलता-व्याकुलतावाले आनंद में क्या होता है कि अंदर झँझट चलती रहती है। यहाँ झँझट बंद हो जाती है और जगत विस्मृत रहा करे। अभी किसी वस्तु को लेकर हमें आनंद आए तो हम समझें कि यह पौद्गलिक आनंद है। यह तो सहज सुख! यानी निराकुल आनंद। आकुलता-व्याकुलता नहीं। मानों ठंडे हो गए हों ऐसा हमें लगता है। किसी प्रकार का उन्माद नहीं होता।

'ज्ञानीपुरुष' के पास निराकुल आनंद उत्पन्न होता है। पुद्गल से कोई लेना-देना है नहीं, तो फिर यह सुख उत्पन्न कहाँ से हुआ? तब कहे कि वह स्वाभाविक सुख, सहज सुख उत्पन्न हुआ, वही आत्मा का सुख है और उतना जिसको समझ में आ गया, वह सहजसुख के स्वपद में रहा, जो फिर धीरे-धीरे परिपूर्ण होता है। जिसका परिचय करें उस रूप हम हो जाएँ।

ज्ञानी का सानिध्य, बढ़ाए जागृति को

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा होने के बाद, यह पुद्गल परिणती में जो परिवर्तन होता है, वह क्यों होता है?

दादाश्री : जागृति बढ़ने से।

प्रश्नकर्ता : मगर दादाजी, ऐसा क्यों होता होगा कि कभी जागृति रहा करे और फिर जब व्यवहार सँभालना हो तो उसमें जागृति नहीं रहे?

दादाश्री : यदि यहाँ लोग शोर मचाते हों तो हम किसी की बात सुन नहीं सकते न? उसके समान है यह। अंदर कर्म का उदय आया, उस घड़ी अंदर ऐसे घुटन होने लगे। उसमें हर्ज नहीं है, वह नुकसान कर्त्ता नहीं है। उस समय जागृति चली नहीं गई। जागृति

होती ही है। मगर जागृति पूर्णरूप से नहीं रहती, झपकी आ जाती है।

मेरे कहने का मतलब है कि, यह जागृति है मगर विकसित नहीं हुई है, इसलिए हम आपको बोलते रहे तो वह खिले, इस ओर की खिले, उस ओर की खिले, सभी ओर से खिले। यानी सारी जागृति खिले। इसलिए हम बोलते हैं, हम करने को नहीं कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : जागृति का जो क्रम होता है क्या उसके अनुसार ही जागृति रहती है? उस जागृति को बढ़ाने का कोई रास्ता है क्या?

दादाश्री : हाँ, हमारे पास आकर बैठा करें तो जागृति बढ़े। इस लिए ही लोग यहाँ रोज़ाना आया करते हैं न! वर्ना एक दिन में ही नहीं कर देता? अच्छा काल हो तो एक ही बार में हो जाता। ये तो सभी कितने दिवालिये हैं! हाँ, बहुत बड़े दिवालिये हैं। (कर्मों की) नादारी की सीट पर बैठे हुए हैं। इसलिए रोज़-रोज़ विधियाँ करता हूँ तो भी कर्ज़ चूकते नहीं होता है। मगर फिर भी ऐसा करते-करते एक दिन पूरा हो जाएगा।

हाज़िर हुआ सो ही ज्ञान

प्रश्नकर्ता : ऐसे निरंतर जागृति नहीं रहती लेकिन समय आने पर ज्ञान हाज़िर हो जाता है।

दादाश्री : हाँ, हाज़िर हो जाता है। यानी हमेशा जो हाज़िर हो जाए, वही ज्ञान कहलाए। जो हाज़िर नहीं हो वह ज्ञान ही कैसे कहलाए?

प्रश्नकर्ता : आप हमें, आत्मा और सब अलग कर देते हैं फिर हमें आत्मा में ही रहना चाहिए न? फिर सब मिक्सचर(मिश्रण) क्यों हो जाता है?

दादाश्री : ऐसा है, इस मुसीबत को हमें 'देखना' ही है, उस मुसीबत में हाथ ड़ालेगा तो जलेगा। हम होली देखें तो देखने से हमारी आँखें जलती नहीं है, मगर हम यदि उसमें से नारियल निकालने हाथ ड़ालें तो चलेंगे। मतलब तू नारियल निकालने हाथ ड़ाला करता है इसलिए यह ऐसा हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : मगर हम अलग होते हैं उसके बाद भी नारियल लेने जाते हैं, जो नहीं होना चाहिए न?

दादाश्री : हाँ, यह नारियल लेने जाना यानी तुम अपनी जागृति को धकेल कर, उस जागृति को धक्का देकर मुसीबत में घुसते हो। क्योंकि कर्म के उदय भारी हैं इसलिए मनुष्य कब तक सँभल सके? ऊँगली पर नल का पानी पड़ता हो तो उसके नीचे कब तक ऊँगली धरे रहें? तब कहे आधा इंच, पौना इंच की धारा हो तब तक, मगर दो इंच का फॉर्स रहा तो ऊँगली खिसक जाएगी। मतलब यह कर्म के उदय इतने भारी हैं इसलिए जागृति खिसक जाती है। डिग्री लेने कितने साल कालेज में गए थे?

प्रश्नकर्ता : छः।

दादाश्री : मुझे उतने सालों की ज़रूरत नहीं है। मैं तो कहता हूँ छः महीने ही तुम मेरे साथ रहो तो बहुत हो गया। सारी, पूरी अनंत जन्म की कमी भरपाई हो जाए।

जागृत का सानिध्य बढ़ाए जागृति

प्रश्नकर्ता : हमारी अब थोड़ी-थोड़ी जागृति बढ़ रही है, मगर उसे ज्यादा बढ़ाना चाहें तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : यदि जागृति बढ़ाना चाहें तो जागृत के साथ बैठना चाहिए। ऐसा है कि यदि सब झपकियाँ ले रहे हों तो आपको भी झपकी आ जाए। और साथ में सभी जागृत हों तो यदि झपकी आ रही हो तो भी बंद हो जाए, इसलिए जागृत के साथ बैठना। अभी राग होता हो तो वह ज्ञानी के ऊपर होगा या ज्ञानी के फॉलोअर्स(अनुयायी) के ऊपर होगा, दूसरे बाहर तो नहीं होता है न?

प्रश्नकर्ता : दूसरा राग नहीं होता।

दादाश्री : तब इस राग को तो प्रत्यक्ष मोक्ष का कारण कहा है। उस राग से तो आपको उनके पास बैठने के संयोग प्राप्त होते हैं और उसके फलस्वरूप

आप में जागृति उत्पन्न हो जाती है। दीये का प्रकाश तेज़ होता जाए। उदाहरण के तौर पर, स्टेशन के प्लेटफ़ॉर्म पर लोग बैठे हों और आप भी बैठे हों। तब, आपके आसपास बैठे सभी झपकियाँ ले रहे हों तो फिर आप भी सत्संग करते-करते झपकियाँ लेने लगें। मतलब, जिनके साथ बैठेंगे ऐसा फल मिलेगा। सोते हुओं के साथ बैठेंगे तो नींद लग जाएगी और जागते हुओं के साथ बैठेंगे तो जागृति का फल मिलेगा। धंधे पर जाएँ तो फिर उन लोगों के साथ ही उठना-बैठना पड़े न?

प्रश्नकर्ता : बैठना पड़े। मतलब उसमें अजागृति होती है न?

दादाश्री : हाँ, होती है न! स्वाभाविक होगी ही। इसलिए ऐसे वक्त में उसे जाना करें वह भी एक तरह की जागृति है। 'इससे अजागृति उत्पन्न हुई है' ऐसा जाना करें, वह भी एक जागृति है।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, जागृति को रोकनेवाले ये कारण पीछले हैं या आज के भी हो सकते हैं?

दादाश्री : पीछले तो सारे कारण अजागृतिवाले ही थे। अब जो ज्ञान दिया है उसके बाद के कारणों में आज्ञा में रहे, तो जागृति ऊँची रहे।

प्रश्नकर्ता : तो फिर आज के जागृति को रोकनेवाले वे कारण कौन-से हैं?

दादाश्री : मेरे साथ ज़्यादा परिचय में नहीं रहा जाता हो, मेरी बात पूरी तरह से समझ में नहीं आती हो, इसलिए।

प्रश्नकर्ता : आपकी बात खुद पूर्ण रूप से क्या कोई समझ सके?

दादाश्री : क्यों नहीं समझ सके? परिचय में रहे और खुद ने समझने का तय किया हो फिर क्यों नहीं समझ सके?

प्रश्नकर्ता : तय करने के बावजूद अभी समझ नहीं सकते इसका क्या कारण है?

दादाश्री : परिचय नहीं है। इससे संधान कट जाता है। आज दो घंटे बैठा हो और फिर कोई गैरसमझ रह गई और दूसरे दिन दो घंटे यों ही व्यर्थ गवाँए उसके बजाय लंबे समय तक अखंड बैठने पर समस्या का हल निकलेगा।

प्रश्नकर्ता : मगर वह तो बाहर के संयोगों के अधीन है न? आपसे संधान रखने का निश्चय होता है...

दादाश्री : वह बराबर है। इसलिए हम कहते हैं न कि व्यवस्थित है। ऐसे संयोग आ मिलने चाहिए।

प्रश्नकर्ता : मगर ऐसा निश्चय है इसलिए आगे जाकर ज़रूर आ मिलेगा? यह निश्चय है इसलिए व्यवस्थित बदलेगा क्या?

दादाश्री : वह तो बदलता है! व्यवस्थित तो बदलता ही रहता है। जैसा हमारा निश्चय होता है, व्यवस्थित उसी ओर ही जाता है। हमारा निश्चय होता है जिस दिशा का, उस दिशा में ही व्यवस्थित को जाना पड़ता है। व्यवस्थित का नियम ऐसा हैं कि 'तेरा निश्चय किस ओर है?'(उस प्रकार संयोग आ मिलते हैं।)

प्रश्नकर्ता : मगर वे पहले के निश्चय फिर अवरोध नहीं करते न?

दादाश्री : पहले के निश्चय से यहाँ कोई लेना-देना नहीं है। आज का निश्चय क्या है? मगर(आज का) वह निश्चय विरोधाभासी नहीं होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : मगर प्रकृति के आगे सभी लाचार होते हैं।

दादाश्री : केवल असामान्य पुरुष ही प्रकृति के आगे लाचार नहीं होते, शेष सभी प्रकृति के आगे लाचार हैं।

होता है परिवर्तन ज्ञानी के साथ रहने पर

प्रश्नकर्ता : यह ज्ञान मिलने के बाद अब मेरा किसी के साथ टकराव नहीं होता है, सब जगह सँभाल लेता हूँ, मगर इनके साथ (फाइल नं. दो के साथ) छः-आठ महीने में एकबार कहासुनी हो जाती है। हालाँकि

अब बहुत कम हो गया है, लेकिन उनके साथ आंतरिक तप नहीं हो पाता, बोलना हो ही जाता है। वहाँ क्या करना?

दादाश्री : उसमें हर्ज नहीं। वहाँ तो निपटारा करने पर ही तेरा छुटकारा है न! वह(सामनेवाला) निपटारा करे, फिर आप को निपटारा करना है, वहीं पर टकराव हो जाए मतलब एक ही व्यक्ति की भूल नहीं कहलाए, दोनों की ही भूल होती है। किसी की चालीस प्रतिशतवाली, किसी की साठ प्रतिशतवाली, किसी की तीस प्रतिशतवाली, चाहे अस्सी प्रतिशत या सत्तर प्रतिशत हो, मगर दोनों की कोई न कोई भूल तो होनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : और बाद में दो-पाँच मिनट में समाधान तो आ ही जाता है।

दादाश्री : वह तो आ जाए।

प्रश्नकर्ता : मगर यदि पराक्रम भाव उपयोग में आए और संयोग सँभल जाए तो आनंद होता है। मगर अभी सँभल नहीं पाए न?

दादाश्री : मगर ऐसी जागृति रखकर धीरे-धीरे करते रहना। आप ज्यों-ज्यों मेरे साथ रहेंगे, त्यों-त्यों ऐसा परिवर्तन होता जाएगा। मेरा एक ही शब्द यदि आपके कानों में पड़े, तो फिर वह शब्द ही काम किया करे।

प्रश्नकर्ता : ऐसा कहा जाता है कि अवसर चूका वह सौ साल जीये ऐसे हमारे जो कषाय उत्पन्न होते हैं उन पर यदि काबू आ जाए तो कितनी बड़ी जीत कहलाए?

दादाश्री : काबू किसे कहा जाए? कि आप चाहे तब कर पाएँ। आपको ज्ञान जागृति में आ गया तो फिर कषाय तो कंट्रोल में ही होते हैं, ज्ञान ही काम किया करता है।

यानी सबसे अच्छा उपाय यही है कि 'चंदुभाई कैसे हो, कैसे नहीं,' यही बातें करने योग्य है, वही उपाय है। क्या कहना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : उसके साथ बातें करना और कहते रहना चाहिए कि 'यह अच्छा नहीं कहलाए मौका क्यों चूक जाते हो?'

दादाश्री : ऐसा कहना। ऐसा सबकुछ कह सकते हैं। फिर चूक जाए तो फिर से कहना। और प्रतिक्रमण करना, प्रत्याख्यान भी करना ही पड़े वर्ना फिर, 'जो किया वह सही था,' ऐसा मान ले।

प्रतिक्रमण किया मतलब अब आपका उस बाबत संबंधी अभिप्राय छूट गया कि 'यही सच है और यह गलत है।' ऐसा आपका अभिप्राय टूट गया।

फाइलों से अटका स्पष्ट वेदन

प्रश्नकर्ता : दादाजी, इस ज्ञान के बाद महात्माओं को इतना तो मालूम हुआ कि आत्मा अनंत सुख का धाम है। अब स्पष्ट वेदन जो अनुभव में आना चाहिए उसके आने में बाधक कारण कौन-से हैं?

दादाश्री : उस स्पष्ट वेदन में बाधक कारण यही, कि फाइलों का अभी भी बहुत ज़ोर है। यदि फाइलों का ज़ोर ज्यादा नहीं रहे तो अनुभव बढ़ता जाए।

जैसे कि, दोपहर डेढ़ बजे यदि कोई कहे कि 'अभी मेरे बाहर जाने में क्या हर्ज है?' तब उसे समझाए कि, 'अभी डेढ़ बजने को है, पाँच बजे जाना वर्ना मारे गर्मी के तेरा दम निकल जाएगा।' इस प्रकार, फाइलों का ज़ोर है इसलिए यह सब हुआ करता है। फाइलें कम होने पर अपने आप ही फ़र्क मालूम होगा। यानी, फाइलें कम हो ऐसा कीजिए। पाँच आज्ञा का पालन करें। बस उतना ही करने को है, दूसरा कुछ नहीं करना है।

ये सारी फाइलें कम होंगी, फिर तो आनंद समाएगा नहीं। आनंद छलकेगा और पड़ोसवालों को भी लाभ होगा। क्योंकि जो कोई वस्तु छलकती है मतलब बाहर निकलती है और जो बाहर निकले वह दूसरें को काम आए, इसलिए पड़ोसी को भी लाभ

पहुँचे। अभी फाइलों का निपटारा करने के कारण ही आनंद नहीं आता है। ये सारे बखेड़े उस आनंद का आस्वाद नहीं लेने देते।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान पाने के बाद कितने समय में फाइलों का निपटारा हो जाता है?

दादाश्री : वह तो जैसी चिकनाई, यदि ज़्यादा चिकनाई रही तो सारी ज़िंदगी चलती रहे और कम रही तो दस-बारह महीनों में पूरी हो जाए।

प्रश्नकर्ता : मगर ज्ञान प्राप्ति के बाद क्या ऐसा एक ही जन्म में हो जाए कि निपटारा होने में दो-चार जन्म निकल जाए? कितना समय लगे?

दादाश्री : एक-दो जन्म लगे। जिसे निपटारा ही करना है, उसे देर नहीं लगे। जिसे निपटारा नहीं करना है, उसे बहुत समय लगे। निपटारा लाना है, उसके लिए देर नहीं है। मूल आत्मशक्ति का स्वभाव क्या है कि यदि आपको निपटारा लाना है तो वह निबेड़ा लाने में हैल्प करेगी। निपटारा लाना है तो अक्रम में आ जाइये, मार्ग मिल ही गया है अभी। मगर आप परिचय में नहीं रहते हैं न? यहाँ मेरे परिचय में कितना समय रहे? यह बताइये।

प्रश्नकर्ता : दस घंटे के करीब रहे होंगे।

दादाश्री : अब दस घंटे में आप इतना बड़ा ज्ञान पाना चाहते हैं। इस समय आपके हाथ आया है यही बड़ा आश्चर्य है। दस घंटे में आप इतना बड़ा फल भोगते हैं! ज्ञानीपुरुष के साथ एक-दो घंटे गुज़ारने हों तो बहुत बड़ी पुण्याई चाहिए। यदि दस घंटे का इतना फल मिलता है तो फिर छ:सौ घंटे गुज़ारने का फल कितना मिलता होगा?

पड़ोसी के परिणाम नहीं होते हमारे

प्रश्नकर्ता : कभी-कभी फाइलों का समभाव से निपटारा नहीं हो पाता?

दादाश्री : 'समभाव से निपटारा नहीं होता है,' यह जिसने 'जाना' वह आत्मधर्म और समभाव से निपटारा होना या नहीं होना वह पुद्गल धर्म। दोनों के धर्म अलग है। पुद्गल धर्म का पालन हो या नहीं हो, उसमें हमें क्या लेना-देना। हमने 'जाना' तो सही न? 'जाना' मतलब हम अपने धर्म में हैं। पुद्गल के धर्म का पालन होवे या नहीं होवे, हमें लेना-देना नहीं है। पुद्गल धर्म अलग, आत्मधर्म अलग। आत्मधर्म यानी निरंतर 'जाना' करना, संपूर्ण जागृति। एक परमाणु उड़ा हो तो मालूम हो जाए, वह आत्मा कहलाए। पराई पुद्गल पीड़ा में पड़ना नहीं। पुद्गल तो घड़ी में ऊँचा होता है, घड़ी में नीचा होता है। 'जाना' करना वह हमारा धर्म है और (असर होने पर) ऊपर-नीचे होना, मतभेद होना, वह तो पुराना परिचय है। बढ़ने पर अच्छा लगे और घटने पर बूरा लगे, वह धर्म अब हमारा नहीं रहना चाहिए। वह परिचय पहले का है। इसलिए हमें (पुद्गल को) कह देना है कि 'ऐसा (धर्म) नहीं है हमारा, यह (परिणाम) हमारा नहीं हो सकता।' वे पड़ोसी (फाइल नं. एक) के परिणाम हैं। 'दादा' ने मना किया और फिर भी उसे आप अपना मानें, उसका फिर 'दादा' क्या करें?

यानी हमें इस तरह समभाव से निपटारा करना है, ताकि छुटकारा हो जाए। फिर चाहे वह खराब हो, दुनिया बदनाम कर डाले ऐसा हो तो भी हमें बाधक नहीं है, उसे 'देखा ही करें'। देखनेवाले को देखने की वस्तु के साथ कोई संबंध नहीं होता है। देखने की वस्तु चाहे कितनी भी खराब हो तब भी, भीतर के 'देखनेवाले' को, द्रष्टा को, राग भी नहीं होता और द्वेष भी नहीं होता है। 'देखनेवाले' को कोई लेना-देना नहीं है। भीतर खराब से खराब, सारा जगत निंदा करे ऐसे भाव उत्पन्न हुए हों, डिस्चार्ज़ में आए हों, तब भी उन्हें हमें देखा करना है। 'ओहोहो ! ऐसा कैसा चंदुभाई? आपको तो मैं लायक समझता था लेकिन आप तो नालायक हैं,' ऐसा कहना ज़रा।

प्रश्नकर्ता : बराबर है। मगर खराब भाव होते हों तो?

दादाश्री : खराब भाव हो तो भी देखा करना।

खराब वर्तन हो उसे भी 'देखा' कीजिए।

प्रश्नकर्ता : वाणी निकले तब भी 'देखा' करें?

दादाश्री : वाणी निकले तब भी 'देखा' करना। वह निकले तो भी जुदा रहना। जुदा होने में चाहे थोड़ी देर लगे, मगर जुदा होना चाहिए। आप चाहे थोड़ी देर के बाद जुदा होते हैं मगर इस प्रकार स्टेपिंग लें (आगे बढ़ें), ताकि फिर आगे चलकर तन्मयता खलास हो जाए। हमें तो यह ए. एम. पटेल, ज्ञानीपुरुष बातें करते हों, वह सब दिखाई दें। जो कुछ भी करते हों वह सब दिखाई दे। यानी, आपको ऐसा करना है, ये भाव करने हैं। अभी से ऐसा एकदम से नहीं होगा, इसलिए (निपटारे हेतु) दो-तीन जन्म लगे ऐसा हम कहते हैं न!

पूर्व परिचय से थकान का भास

प्रश्नकर्ता : मन-वचन-काया को सारा दिन देखने पर थकान होती है तो थकनेवाला कौन है?

दादाश्री : वह थकान यानी, हमारे मन में जो गलत असर होता है तब वह असर ही थकता है। अन्य कोई भी थकता नहीं है, थके ही नहीं न? देखनेवाला थकता नहीं है। काम करनेवाला थकता है।

प्रश्नकर्ता : देखनेवाली तो प्रज्ञा है न?

दादाश्री : प्रज्ञा ही, अभी तो प्रज्ञा ही काम करती है! जब तक ये सारा दख़ल है, तब तक प्रज्ञा काम करती रहेगी। फिर दख़ल नहीं रहा, तो आत्मा।

प्रश्नकर्ता : मगर दादाजी, थक तो जाते हैं। कईबार ऐसा होता है कि 'कब बंद होगा यह सब?' ऐसा तो थकान लगे तभी होता है न? सहज होता तो नहीं होता?

दादाश्री : वह जो थकान लगती है वह भी ऐसा भास होता है। थकान तो लगती ही नहीं! देखनेवाले को कोई थकान नहीं लगती। काम करनेवाले को थकान होती है। देखनेवाले को तो थकान छूएगी ही नहीं। थक जाने का पहले का परिचय है न, इसलिए ऐसा लगे कि थकान लग गई।

प्रश्नकर्ता : 'यह मन ऐसा क्यों करता है?' 'वचन ऐसा क्यों निकला?' ऐसे थोड़े अभिप्राय अंदर होते होंगे, इसलिए भी थकान होती होगी शायद?

दादाश्री : अभिप्राय, हाँ, ऐसा सब होता रहता है।

देखना, केवल खुद के पुद्‌गल को ही

प्रश्नकर्ता : हम अलग देखने का प्रयत्न करते हैं मगर थोड़ी देर रहने के बाद खिसक जाता है।

दादाश्री : खुद को बाहर का अभ्यास ज़्यादा है न! अलगपन का बिलकुल अभ्यास ही नहीं है न? किसी पुद्‌गल की वस्तु ऐसी-वैसी हो और उसके ऊपर खुद उपयोग देकर निरीक्षण करते हों तो ख्याल में रहे न। ऐसे यह अपने पुद्‌गल को देखना है।

प्रश्नकर्ता : यानी खुद के एक ही पुद्‌गल को देखना, बाहर कोई दख़ल नहीं?

दादाश्री : और क्या? एक पुद्‌गल देख सकें तो बहुत हो गया। देख सकते ही नहीं न! बाहर ही दख़ल करे, ऐसा कहना चाहते हैं। खुद देखने का अभ्यास करें मगर हो नहीं पाए, थोड़ी-थोड़ी देर रहे ऐसा, फिर चूक जाए, शेष बाहर ही जाता रहे।

प्रश्नकर्ता : वह स्टेज(अवस्था) आएगा तो सही न?

दादाश्री : वह प्रयत्न वही का वही होता है, किंतु ऐसा रहता नहीं है, टिकता नहीं है। जाए और आए, जाए और आए। वह जानकर रखना है। एक पुद्‌गल ही देखना है। चंदुभाई का मन क्या करता है? बुद्धि क्या करती है? चित्त क्या करता है? चंदुभाई क्या कर रहे हैं? उसका निरंतर हर तरह से निरीक्षण करना वह क्या है? वही कंप्लीट(पूर्ण) शुद्धात्मा।

ज्ञानी के परिचय से होवे वीतराग व्यवहार

प्रश्नकर्ता : मान लीजिए कि भगवान महावीर पुद्‌गल को देखते हैं और उसी समय गौतमस्वामी उनसे

प्रश्न पूछें तो जवाब निकले न?

दादाश्री : तब भी वे खुद तो एक पुद्‌गल को ही देखते हों।

प्रश्नकर्ता : तो वह जवाब बाहरवाला हिस्सा (मनो वृत्तियाँ) दे न?

दादाश्री : 'खुद' जवाब नहीं देते, उस घड़ी जो पुद्‌गल हिस्सा था, वही हिस्सा जवाब देता है।

प्रश्नकर्ता : बराबर है, मगर बाहरवाला हिस्सा हम किसे कहते हैं?

दादाश्री : देखनेवाला और जाननेवाला है उसको बाहरवाला हिस्सा होता ही नहीं है। यह तू बोल रहा है, उसे देखे जाने, यह ज्ञान कहलाए।

प्रश्नकर्ता : तो दादाजी, ऐसा स्टेज अपने आप आएगा?

दादाश्री : हम (आप) तो वही प्रयत्न में रहें! उसी ओर आगे बढ़ें!

प्रश्नकर्ता : एक ही भाव में रहना?

दादाश्री : एक ही भाव में, ज्ञाता-द्रष्टा भाव में ही रहना है।

प्रश्नकर्ता : इस समय तो वह कठिन पड़ता है।

दादाश्री : नहीं, इस समय वह(स्टेज) नहीं होता! इस समय आपको बाहर देखना पड़ता है, मगर यदि वह बिना एटेचमेंट का हो तो वह ज्ञाता-द्रष्टा कहलाए, और जो एटेचमेंट सहित होता है वह इन्द्रियज्ञान कहलाए।

प्रश्नकर्ता : तन्मय हो जाने पर इन्द्रियज्ञान आ जाए?

दादाश्री : नहीं, कभी तन्मय हो जाए तो भी नहीं, एटेचमेंट सहित होने पर ही इन्द्रियज्ञान कहलाए। एटेचमेंट नहीं होने पर भी किसी जगह तन्मयता हो जाए। मगर ऐसे तन्मय होना वह पद्धति अनुसार नहीं है। उसे फिर किसी समय अलग करना पड़ेगा। लगातार(अलगपन) ही होना चाहिए। तन्मय हो जाए तो समझना कि खुद में ग्रंथि है। वह ग्रंथि छूटनी चाहिए!

फिर व्यवहार ही पूरा बिना एटेचमेंट का हो जाता है। वीतराग व्यवहार हो जाता है। कई लोगों को वीतराग व्यवहार हो गया है। मगर वे हमारे परिचय में रहते हैं। बहुत दूर रहने पर भी वे यहाँ आते-जाते रहते हैं, क्योंकि परिचय में रहना पड़े न!

ज्ञान परिणमन से होते हैं सहज

यह 'ज्ञान' परिणमित होने पर सारे कर्म कम हो जाते हैं इसलिए सहज होता जाता है। अभी आंशिक रूप से सहज हो रहा है यह संपूर्ण सहज हो जाए। देहाध्यास टूटे इसलिए सहज होता जाए, जितने अंश तक सहज हो उतने अंश तक समाधि होती है। अब आपको विश्वास हो गया न कि मार्ग मिल गया है?

प्रश्नकर्ता : हाँ जी।

दादाश्री : जिसे यह विश्वास हो जाए उसका अंत आ जाए। हरएक वस्तु का अंत आता है, विचारों का अंत आता है, ज्ञान का अंत आता है, सभी का अंत आता है, मगर एक अज्ञान का अंत नहीं आता।

'दृष्टि द्रष्टा में पड़ी' ऐसा जो लोग कहते हैं न, वे तो द्रष्टा से कोसों दूर हैं। उनको द्रष्टा प्राप्त करने में लंबा समय लगेगा और हम सबको तो द्रष्टा प्राप्त हो गया है। जगत जिसकी खोज़ में है वह हमारे पास है। अब उसका उपयोग, शुद्ध उपयोग कैसे करना यह हमारा काम है, वह पुरुषार्थ कहलाए।

आप घर से बाहर निकलें कि शुद्ध उपयोग में आ जाएँ यानी रिअल और रिलेटिव सब देखते-देखते आगे बढ़ते जाएँ, उस समय शुद्ध उपयोग रहे। फिर यदि किसी के साथ बातचीत करने लगें उस घड़ी बातचीत होती रहे और अंदर शुद्ध उपयोग रखा करें। बातचीत जो करते हैं वह 'चंदुलाल'(फाइल नंबर एक) करे और 'हम' सब देखा करें। ऐसे उपयोग रह सकता

है, वह कोई मुश्किल वस्तु नहीं है।

कषायों के उपशम से बढ़े जागृति

मन में तन्मयाकार परिणाम(तन्मयता) नहीं हो, वाणी में तन्मयाकार परिणाम नहीं हो, वर्तन में तन्मयाकार परिणाम नहीं हो, वह शुद्ध उपयोग। जागृति आने में देर लगती है। धीरे-धीरे ज्यों-ज्यों कषाय उपशम होते हैं, 'डिस्चार्ज' कषाय ज्यों-ज्यों कम होते हैं त्यों-त्यों जागृति बढ़ती है। अब नये कषाय चार्ज नहीं होते, लेकिन जो 'डिस्चार्ज' कषाय हैं वे 'डिस्चार्ज' होते ही रहेंगे।

हम आपके घर आए हों और आप पत्नी के साथ अकुलाये हों तो हम ऐसा नहीं देखते कि आप यह गलत कर रहे हैं। वह आपकी अकुलाहट 'डिस्चार्ज' होती अकुलाहट है। आपको 'ज्ञान' दिया है इसलिए आप कच्चे नहीं पड़ते। मगर 'डिस्चार्ज' तो होगो ही न? हम इतना ही देख ले कि (आपका) उपयोग था या नहीं।

प्रश्नकर्ता : दृष्टि का द्रष्टा खोजने की बात अभी मेरी समझ में नहीं आई है, इसे मुझे समझाइये ज़रा।

दादाश्री : ये सारे महात्मा द्रष्टा खोजकर बैठे हैं, मगर जिसे स्वरूप का भान(आत्मज्ञान) नहीं हो उसे कहेंगे कि 'तेरी दृष्टि पड़ती है वह तो दृश्य है, मगर वहाँ द्रष्टा कौन है? इसकी तलाश कर।' ऐसा हम कहना चाहते हैं।

बाहर तो यह इन्द्रियदृष्टि है। मगर जब मन की सारी क्रियाएँ, मन क्या-क्या बोले है? क्या सोचे है? फिर बुद्धि की क्रिया, बुद्धि क्या-क्या दिखलाती है? फिर चित्त कहाँ-कहाँ भटकता है? अहंकार 'डिप्रेस'(उदास) होता है या 'एलिवेट' होता है(ऊपर उठता है)? इन सभी को देखा करना वही हमारा द्रष्टा। दृष्टि का विषय वह दृश्य है और हम द्रष्टा हैं।

प्रश्नकर्ता : बाहर के या अंदर के किसी भी संयोग में, कोई भी उदय हो, तब हम जानें कि यह मेरा स्वभाव नहीं है, तब अनुभव होता है न?

दादाश्री : हाँ, होता है। 'मेरा स्वभाव यह नहीं है' ऐसा जो समझता है वह 'खुद के स्वभाव' में स्थिर होता है। 'चंदुलाल' चाहे कितने भी अकुलाये हों फिर भी 'आपकी' जागृति जाए नहीं ऐसा यह ज्ञान है और अकुलाहट तो हुए बगैर रहेगी ही नहीं क्योंकि वह तो अंदर का भरा हुआ माल है न?

'डिस्चार्ज' मतलब उलटी होने जैसी बात है। किसी मनुष्यने हम पर उलटी कर दी तो उसको लड़ नहीं सकते, क्योंकि उस बेचारे को करनी नहीं है मगर हो जाती है, उसमें वह क्या करे? वैसे ही, ये कषाय उलटी की तरह 'डिस्चार्ज' होते हैं। फिर आगे अच्छा होता जाए, भूमिका शुद्ध होती जाए।

उपयोग, ज्ञानी की उपस्थिति में

उपयोग किसे कहा जाए? मानों कोई हजार-हजार के नोट गिन रहा हो तो क्या उसका उपयोग किसी दूसरी जगह जाएगा? वह उपयोग कहलाए। ऐसा ही उपयोग हमें निरंतर रहा करे। हमारी उपस्थिति में रहें तो आपका भी उपयोग रहे।

प्रश्नकर्ता : इन भक्तिपदों में या फिर अन्यत्र अलग-अलग मात्रा में रुचि होती है इसलिए ऐसा होता है क्या?

दादाश्री : रुचि रखने की ज़रूरत नहीं है। 'हमें'(खुद को) तो उपयोग देना है। 'हम' ऐसा कहें कि, 'चंदुलाल, दादाजी के दरबार में बैठे हैं अब यहाँ जो-जो चलता है उसमें उपयोग देकर चलना।' फिर 'हम' देखा करें, उपयोग चूकने पर तुरंत बताना, 'चंदुलाल चूके, ऐसा नहीं होना चाहिए।'

यदि मुझे कोई पाँच या दस रुपये की रेज़गारी दे तो मैं कभी उसे गिनने नहीं बैठनेवाला। चाहे उसने पच्चीस-पचास पैसे कम दिए हों, मगर उतनी रेज़गारी गिनने में मेरा कितना समय व्यर्थ जाए? लक्ष्मीजी के

बारे में निस्पृह नहीं हो जाना है लेकिन उसमें उपयोग नहीं दिया जाए।

उपयोग तो सबसे बड़ी से बड़ी वस्तु है।

यह उपयोग कहाँ तक देना है? रात-दिन 'दादा' की याद बनी रहे, उनके बगैर अच्छा नहीं लगे, उनका विरह लगे, तब उसमें से 'इलैक्ट्रिसिटी' झरने पर प्रकाश निकले (मोह रूपी आवरण टूटते है), पूरा स्वयं प्रकाश!

जागे विरह की वेदना, मोक्ष में जानेवाले को

प्रश्नकर्ता : ज्ञानीपुरुष के परिचय में नहीं रहा जाए और 'ज्ञानीपुरुष' के विरह में जो वेदना उत्पन्न होती है उसे कैसी वेदना कहलाए?

दादाश्री : वह वेदना तो ओहोहो! अंदर 'इलैक्ट्रिसिटी' उत्पन्न होती है और उससे स्वरूप तेजोमय होता जाता है। वह तो बहुत उत्तम वस्तु कहलाए। विरह की वेदना का तो महाभाग्य से ही उदय होता है। लंबे अरसे के परिचय के कारण उसे वह होता है। जिसे मोक्ष में जाना हो उसे ऐसी वेदना जागती है! आपको उसकी जल्दी करने की ज़रूरत नहीं है। इतने सारे जन्म बर्बाद किए, अब एक-दो जन्म के लिए क्या नुकसान होनेवाला है? इतने जन्म भटक-भटक करते रहे उसकी थकान नहीं लगी और अब एक-दो जन्म के लिए थकान लग जानेवाली है? यदि विरही की वेदना उत्पन्न हो, विरही का अर्थ क्या है? कहीं चैन ही नहीं पड़ता हो, ऐसा हो, तब समझना कि जंजाल से छूटे।

सुगंध से लोग खिंचे चले आएँ

प्रश्नकर्ता : दादाजी के परिचय में आनेवालों और दादाजी के सत्संग में रहनेवालों का चरित्र यदि अंदर से खिलता हो तो उनकी सुगंध बाहर फैलेगी कि नहीं, दादाजी?

दादाश्री : सब जितना खिले, उतनी ही सुगंध बाहर आती है। अंदर खिला हो तो भी सुगंध बाहर आएगी और बाहर खिला हो तो भी बाहर आएगी। खिला हुआ गुप्त रहता नहीं है। अरे, यदि आपने मन में ऐसा तय किया हो कि 'मुझे इन महात्माओं को किसी तरह की अड़चन पड़ने नहीं देनी है,' ऐसा भाव किया हो, तो भी महात्माओं को वह बात पहुँच जाती है। आपने किसी से नहीं कहा हो, फिर भी बात पहुँच जाए, ऐसा यह विज्ञान है। इतने पाप धुल गए हैं और सब इतना सारा क्लियर(शुद्ध) हो गया है कि इस समय यदि आप अंदर से गुप्त रहकर भी कुछ करेंगे तो भी सबको पहुँच जाएगा।

प्रश्नकर्ता : मगर दादाजी, मेरा यह कहना है कि दादाजी के पास जो आता है, वे हरएक को ऐसी भावना होती है कि 'हमें जो मिला है वह लोगों को कैसे मिले!' और यदि लोगों को पहुँचाने जाएँगे तो लोग तो पहले बाह्याचार ही देखेंगे न?

दादाश्री : हाँ, वे तो वही देखेंगे न!

प्रश्नकर्ता : इसलिए अब दादाजी के पास आनेवालों में कुछ प्रकार की डिसिप्लिन, कुछ अच्छा वर्तन होना चाहिए न?

दादाश्री : वह तो धीरे-धीरे आएगा। लेकिन यदि अभी आप अपने बल पर करने जाएँगे तो आपकी अन्य बातों को देखकर आपमें ऐब निकालेंगे। 'आप क्यों वकालत करने आए हैं?' कहेंगे। इसलिए आपको तो ऐसा करना है कि अटा-पटाकर उन्हें यहाँ दादाजी के पास ले आना। मैं उन्हें लाइन पर(मोक्ष के मार्ग पर) ला दूँगा फिर। कितने ही लाइन पर आ गए हैं न! इस समय आप लाइन पर लाने जाएँगे तो नहीं आएँगे। क्योंकि आपत्ति जताएँगे कि, 'आप ऐसा(भूलें) क्यों करते हैं?' और वे मुझसे ऐसा नहीं कह सकें न! (क्योंकि मुझमें उन्हें कोई दोष नज़र नहीं आए।)

ज्ञानी ही ज्ञान समझा सकें

प्रश्नकर्ता : ज्ञानीपुरुष से हमें जो ज्ञान होता है वह दूसरों को नहीं समझा सकते क्या?

दादाश्री : उसे समझाना आसान नहीं है। ज्ञान तो इन सभी को हुआ है मगर वे समझा नहीं सकते। हम अकेले ही समझा सकते हैं या तो यह नीरुबहन थोड़ा-थोड़ा समझा सके। जो अधिक परिचय में आए होते हैं, वे थोड़ा-थोड़ा समझाए। यह भाई बहुत कम समझा सके, मगर समझाए। परिचय में आए हैं न? हमारे साथ अधिक परिचय में रहना चाहिए तो सबकुछ समझा सके।

यथार्थ अनुभव से, दर्शन से ज्ञान परिणाम

हमारे यहाँ ज्ञान दिया जाता है तब अनुभव स्पर्श होता है इसलिए प्रतीति बैठती है। मगर वह संपूर्ण अनुभव नहीं कहलाए। दुनिया का ऐसा कायदा है कि हरएक वस्तु की पहले प्रतीति बैठती है। यदि आप कुछ भी समझाएँ जैसे कि, 'आप ऐसा व्यायाम करेंगे तो आपका शरीर और स्वास्थ्य अच्छा हो जाएगा।' ऐसा सुनते ही, यदि सुननेवाला ध्यान से बराबर पद्धति अनुसार सुने तो उसे प्रतीति बैठ जाती है। और प्रतीति बैठने पर खुद ऐसी क्रिया की शुरूआत करता है। फिर शुरूआत करने पर उसे अनुभव होता है, फिर उसे जाना(जानना) कहलाए। फिर वह दूसरों को बता सके। प्रतीति बैठी हो और बताए, तो उसमें बरकत नहीं होती है। यानी, यह प्रतीति बैठने के बाद आपको अनुभव में आने के बाद, वह जो दर्शन में था वह ज्ञान में परिणमित होता जाए।

प्रश्नकर्ता : अनुभव की कक्षा हम कैसे जान सकते हैं?

दादाश्री : जितनी बाबतों में दुनिया का हम पर असर नहीं होता, उतनी हमारी अनुभव की कक्षा पूरी हो गई। जितनी बाबतों में जहाँ-जहाँ असर होता है, वह कक्षा अभी बाकी रही है।

तो भगवान पूर्ण प्रकटे

हमारा दिया हुआ ज्ञान तो इग्ज़ैक्ट अपनी जगह पर है। मूल स्वरूप में जो ज्ञान दिया था, उस मूल स्वरूप की इग्ज़ैक्टनेस(यथार्थता) अभी पूर्ण स्वरूप से आपको आई नहीं है। जब मूल स्वरूप में इग्ज़ैक्टनेस आएगी उसके बाद घट-बढ़ नहीं रहेगी। मतलब एक दिन सारे अवरोध टूट जाएँगे और भगवान हो जाएँगे, जो हमारा मूल स्वरूप है। इस समय भगवान आपमें ज्ञान स्वरूप में है ही, किंतु फिर वे विज्ञान स्वरूप होंगे। पूर्ण प्रकट होंगे!

'मैं' को पहचाननेवाला हुआ परमात्मा

प्रश्नकर्ता : आपका ऐसा वाक्य निकला था कि 'अहंकार को पहचाने तो वह भगवान बनाए ऐसा है।' मतलब अहंकार को पहचानना है?

दादाश्री : अहंकार को पहचाना तो बहुत हो गया! अहंकार को कोई नहीं पहचान सकता न!

प्रश्नकर्ता : यह समझ में नहीं आया। अहंकार को पहचानना, मतलब क्या?

दादाश्री : अहंकार को पहचानना मतलब पूरे पुद्‍गल को पहचानना। 'मैं' के कहनेवाले को अच्छी तरह पहचानना। पूरे पुद्‍गल को पहचान लिया तो भगवान ही हो गया न!

प्रश्नकर्ता : 'मैं' मतलब पूरा पुद्‍गल पहचानना, ऐसा न?

दादाश्री : 'मैं' मतलब ही पूरा पुद्‍गल। 'मैं' मतलब दूसरा कोई नहीं। यानी, यह पुद्‍गल सारा अहंकार का ही है। उस अहंकार को पहचाने उसका कल्याण हो जाए।

प्रश्नकर्ता : आपने, अहंकार वह पुद्‍गल का स्वरूप बताया, तो वह खुद उसमें से शुद्ध होता कैसे है? अशुद्ध की ओर से शुद्ध में वह कैसे आता है?

दादाश्री : वह किस की भक्ति (आराधना) में है? शुद्ध की भक्ति होने पर शुद्ध होता है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' यह भक्ति रही, तो शुद्ध होता है। वर्ना यदि 'मैं राजा हूँ' की भक्ति रही, तो राजा हो जाए।

जो भक्ति करे, वह अहंकार ही है। अशुद्ध की भक्ति करता है तब तक ऐसा अशुद्ध रहता है, शुद्ध

की भक्ति करने पर ऐसा शुद्ध हो जाए। जैसा चिंतन करे वैसा होता रहे। सारा दिन चोरियाँ करता हो, वह शुद्धात्मा की भक्ति कैसे करे? 'मैं चोर ही हूँ' ऐसी भक्ति होती रहे न? और इसलिए हो ही जाए चोर।

प्रश्नकर्ता : मतलब फिर वह जैसा व्यवहार करे ऐसी भक्ति होती है उसकी?

दादाश्री : व्यवहार पर ही भक्ति है सारी। जैसी भक्ति होती है उसके अनुसार ही व्यवहार होता है और व्यवहार होता है उसके अनुसार भक्ति होती है। केवल अंतिम जन्म में ज्ञान होने के बाद व्यवहार और भक्ति दोनों अलग होते हैं। 'व्यवहार काम का नहीं है और निश्चय काम का है' ऐसा हो, तब उस तरफ भक्ति चले कि व्यवहार का अब निपटारा लाना है।

परिचय से अनुभव श्रेणी का प्रारंभ

थिअरेटिकल (वैचारिक) वह अनुभव नहीं कहलाए। वह तो समझ कहलाए और प्रैक्टिकल वह अनुभव है। समझ पूर्ण हो जाए और अनुभव पूर्ण हो, वह ज्योति कहलाए। वही ज्योति, वही ज्ञान, वही परमात्मा।

प्रश्नकर्ता : मगर वह तो आपके साथ रहें तभी समझ आती है न?

दादाश्री : ज्यों-ज्यों परिचय बढ़ता जाए त्यों-त्यों प्रकाश बढ़ता जाए। साथ रहने पर जो परिचय बढ़ा, वह अनुभव कहलाए।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, श्रद्धा और परिचय में क्या अंतर है?

दादाश्री : परिचय से श्रद्धा बैठती है, किंतु श्रद्धा बैठने के बाद भी फिर परिचय बढ़ता जाए वैसे अनुभव होता जाए। विशेष परिचय से श्रद्धा बैठी उसके बाद परिचय क्या कार्य करे? तब कहे, अनुभव बढ़ता जाए, इसलिए परिचय में रहना।

प्रत्यक्ष परिचय नहीं मिले तब

प्रश्नकर्ता : दादाजी, यदि परिचय में नहीं रह सकें तब पुस्तकें कितनी मददकर्त्ता होती है?

दादाश्री : सब मदद करता है। यहाँ की, दादाजी की प्रत्येक चीज़, दादाजी के वे शब्द हैं (पुस्तक के), आशय जो दादाजी का है, मतलब सब हैल्प करता है।

प्रश्नकर्ता : मगर साक्षात परिचय और इसमें अंतर रहेगा न?

दादाश्री : वह तो यदि अंतर देखने जाएँ तो सभी में अंतर होता है। इसलिए हमें तो जिस समय जो आया वह करना है। 'दादा' नहीं हों तब क्या करना? दादाजी की पुस्तक है, वह पढ़ना। पुस्तक में दादाजी ही हैं न? वर्ना आँखे मुँद ले कि तुरंत दादाजी दिखाई दें।

प्रत्यक्ष से पूछकर साध लें प्रगति

जिस रास्ते पर से मैं आया हूँ वही रास्ता मैंनें आपको दे दिया है। मेरे अनुभव का रास्ता ही दिया हैं। शास्त्र में कहीं भी यह अनुभव का रास्ता नहीं होता। शास्त्र में एक भी शब्द ऐसा नहीं है कि जो अनुभव किया हुआ रास्ता हो और इस काल के लोगों को काम आ सके।

प्रश्नकर्ता : इसलिए आप कईबार कहा करते हैं कि 'हमारी उपस्थिति में प्रत्यक्ष कर लीजिए?'

दादाश्री : हम वही कहते हैं न, हमारी उपस्थिति में प्रत्यक्ष मतलब, आपको अपना अनुभव जो हुआ हो, आपके उस अनुभव में उलझनें होती है, इसलिए हमारा अनुभव पूछकर समझ लें ताकि आपके अनुभव की उलझनें सुलझ जाएँ और समझने पर वह अनुभव आपको भी हो जाए। बस वही कर लेना है। हमारे पास अनुभव का स्टोक है और आपको तो अनुभव अब हो रहा है। इसलिए, आपका वह अनुभव सही है या गलत, ऐसे पूछकर समझ लिया मतलब निपटारा आ गया।

जय सच्चिदानंद

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

मुंबई

१८-१९-२० फरवरी - शाम ६-३० से ९ **सत्संग** और **२१ फरवरी** (शनि) शाम ५-३० से ९ - **ज्ञानविधि**
स्थल : योगी सभागृह, स्वामीनारायण मंदिर के पास, **दादर (से.रे.)**. **संपर्क** : 9323528901

भावनगर

७ मार्च शाम ६ से ८-३० **सत्संग** और **८ मार्च (रवि)** शाम ५-३० से ९ - **ज्ञानविधि**
स्थल : शांतिलाल शाह हाइस्कुल मेदान, ए.वी. स्कूल ग्राउन्ड, क्रेसन्ट, भावनगर. **संपर्क** : 9824248789

अमरेली

१० मार्च शाम ६-३० से ९ **सत्संग** और **११ मार्च (बुध)** शाम ५-३० से ९ - **ज्ञानविधि**
स्थल : जीमखाना ग्राउन्ड, एस.टी.डीपो के सामने, अमरेली. **संपर्क** : 9426985638

सावरकुंडला (जि. अमरेली)

१२-१३-१४ मार्च रात ८ से १०-३० **सत्संग** और **१५ मार्च (रवि)** शाम ५-३० से ९ - **ज्ञानविधि**
स्थल : श्री कृष्णकुमारसिंहजी व्यायाम मंदिर, महुवा रोड, सावरकुंडला. **संपर्क** : 9375242080

त्रिमंदिर अडालज

६ मार्च	सुबह ९ से ११	पूज्य दीपकभाई के ३९वे ज्ञानदिन के अवसर पर भक्ति-दर्शन
१९ मार्च	सुबह ७ से ९	पूज्य नीरूमाँ की तीसरी पुण्यतिथि के अवसर पर विशेष भक्ति

अहमदाबाद

१९-२०-२१ मार्च शाम ६-३० से ९ **सत्संग** और **२२ मार्च (रवि)** शाम ५-३० से ९ - **ज्ञानविधि**
स्थल : संस्कार केन्द्र ग्राउन्ड, टागोर होल पासे, पालडी, अहमदाबाद. **संपर्क** : 079-27540408

त्रिमंदिर अडालज में हिन्दी में आध्यात्मिक ज्ञानशिविर

दि. **३० अप्रैल** से **३ मई** २००९, समय : हररोज सुबह ९-३० से १२, शाम ४-३० से ७
दि. **१ मई** दोपहर ३-३० से ७ - **ज्ञानविधि**
सूचना : भाग लेने हेतु फोन (079)39830400 पर या नजदीकी सत्संग सेन्टर पर रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल्स पर

भारत
- **'स्टार प्लस'** पर हररोज सुबह ६-३० से ७ - विज्ञान, शाश्वत सुख का (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'** (नेशनल) पर सुबह ७-३० से ८ (गुरू-शुक्र) 'नई दृष्टि, नई राह' (हिन्दी में)
- गुजरात में **'दूरदर्शन'** पर हररोज दोपहर ३-३0 से ४ (अन्य राज्यों में डीडी-गुजराती पर उसी समय)
- **'आस्था इन्टरनेशनल'** पर हररोज दोपहर १-३० से २

USA ✦ 'TV Asia' पर हररोज सुबह ७ से ७-३० EST (गुजराती में)
USA-UK ✦ **'Aastha International'** पर हररोज सुबह ८ से ८-३०
Africa ✦ **'Aastha International'** पर हररोज सुबह १०-३० से ११
✦ **समग्र विश्व में** (भारत के अलावा) **सोनी टीवी** पर **(सोम से शुक्र) सुबह ७ से ७-३०** (हिन्दी में)

पूज्य नीरूमाँ के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों का सत्संग कार्यक्रम

आरा (बिहार)

२८ फरवरी दोपहर ३ से ६

स्थलः मयणासुंदरी जैन धर्मशाला, जेल रोड, आरा, बिहार. **संपर्क :** 9934620084

पटना (बिहार)

१ मार्च सुबह १० से १२-३०, दोपहर ३ से ६; दि. २ मार्च - दोपहर ३ से ६

स्थलः भारतीय मंडपम्, म्युझियम के पीछे, पटना, बिहार. **संपर्क :** 9431015601

रायपुर (छत्तीसगढ)

४ मार्च दोपहर ३ से ६

स्थल : स्पेक्ट्रम होल, कटोरा तलाव, रायपुर, छत्तीसगढ. **संपर्क :** 9425245616

भिलाइ (दुर्ग, छत्तीसगढ)

५ मार्च दोपहर ३ से ६

स्थल : गायत्री मंदिर, सेक्टर-6, भिलाइ, जिला : दुर्ग. **संपर्क :** 9425245616

दोंगरगढ (जि. राजनंदगाँव, छत्तीसगढ)

६ मार्च दोपहर ३ से ६

स्थल : शिरपानी भवन, मा बल्मेश्वरी ट्रस्ट, दोंगरगढ, जिला-राजनंदगाँव. **संपर्क :** 9425245616

कोलकता (पश्चिम बंगाल)

८ मार्च सुबह ९-३० से १२-३०, दोपहर ३ से ६

स्थल : लक्ष्मीनारायण मंदिर, ४२, शरत बोझ रोड, लेन्सडॉन, पड्डापुकुर के पास, कोलकता. **संपर्क :** 9330333885

इन्दोर (मध्यप्रदेश)

१ मार्च सुबह १० से १२-३०, शाम ४ से ६-३०

स्थल : ७२, हम्पी-डम्पी स्कूल, नारायणबाग, रामबाग, इन्दोर. **संपर्क :** 9893278866, 9893545351

भोपाल (मध्यप्रदेश)

१ मार्च सुबह १० से १, दोपहर ३ से ६

स्थल : जनक विहार कॉम्पलेक्ष, अेरटेल बिल्डींग के सामने, मालवीयानगर, भोपाल. **संपर्क :** 9229568333

जबलपुर (मध्यप्रदेश)

३-४ मार्च शाम ६ से ८

स्थल : सनातन धर्म श्री कृष्ण मंदिर परिसर, गोरखपुर, जबलपुर. **संपर्क :** 9425160428

बंगलौर (कर्णाटक)

१२-१३ मार्च समय और स्थल की जानकारी के लिए **संपर्क :** 9341948509

कोचीन (केराला)

१४ मार्च (शनि) शाम ७-३० से ९-३० और **१५ मार्च (रवि) सुबह १० से १२**

स्थल : जैन मंदिर होल, गुजराती रोड, मटांचेरी, कोचीन. **संपर्क :** 9349225871

Pujya Deepakbhai Desai - UK SATSANG SCHEDULE (2009)

Date	**Day**	**Time**	**City**	**Venue**
26 Mar 09	Thursday	7:30 - 10:00 PM	Leicester	**Shree Ram Mandir,** Tilda Upper Hall, Hildyard Road, Leicester LE4 5GG
27 Mar 09	Friday	7:30 - 10:00 PM	Leicester	
28 Mar 09	Saturday	6:00 - 10:00 PM	**Leicester - GNAN VIDHI**	
29 Mar 09	Sunday	9:30 AM - 12:00 Noon	**Small Bhagwan Pratishta**	
		4:30 - 7:00 PM	Satsang	
31 Mar 09	Tuesday	7:30- 10:00 PM	London	**Navnat Vanik Association,** Printing House Lane, Hayes, UB3 1AR
01 Apr 09	Wednesday	7:30 - 10:00 PM	London	**Brent Town Hall,** Forty lane, Wembley, HA9 9HD
02 Apr 09	Thursday	7:30 - 10:00 PM	London	
03 Apr 09	Friday	7:30 - 10:00 PM	London	
04 Apr 09	Saturday	6:00 - 10:00 PM	**London - GNAN VIDHI**	
05 Apr 09	Sunday	4:30 - 7:00 PM	Follow up satsang	
06 Apr 09	Monday	7:30 - 10:00 PM	ENGLISH SATSANG	**Kingbury High School,** Stag Lane, Kingsbury, London, NW9 9AT
09 Apr 09	Thursday	Shibir timing details to be advised nearer the time.	**MAHATMA SHIBIR, Please contact Utkarsh Vanjani for bookings and more details on +447723085095**	**Little Canada, PGL Centre**, New Road, Wootton Bridge, Ryde, Isle of Wight, PO33 4JP
10 Apr 09	Friday			
11 Apr 09	Saturday			
12 Apr 09	Sunday			
13 Apr 09	Monday			
10 Jul 09	Friday	7:30 - 10:00 PM	London	**Barnhill Community High School,** Yeading Lane, Hayes, Middlesex, UB4 9LE.
11 Jul 09	Saturday	6:00 - 10:00 PM	**London - GNAN VIDHI**	
12 Jul 09	Sunday	8:00 AM - 9:00 PM	**GURUPURNIMA CELEBRATIONS**	

FOR FURTHER INFORMATION ON ALL SATSANG ACTIVITY PLEASE CONTACT :
Varshaben Shah - 020 8427 3374 or 07956 476253 & Leicester Contact - Trushaben - 0116 2208081

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल्स पर

भारत ✦ **‘Zee Gujarati’** पर हररोज सुबह ७ से ७-३0 (गुजराती में)
✦ **‘दूरदर्शन’** डीडी-गुजराती पर हररोज रात ९ से ९-३० - ‘ज्ञानप्रकाश’ (गुजराती में)
✦ **‘आस्था इन्टरनेशनल’** पर हररोज रात ३ से ३-३०
U.S.A. ✦ **'SAHARA ONE'** पर सोम से शुक्र ९ से ९-३० AM EST (गुजराती में)
USA-UK ✦ **'Aastha International'** पर हररोज रात ९-३० से १०
Africa ✦ **'Aastha International'** पर हररोज रात १२ से १२-३०